



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“
पापपेला रें लगायों तो पाप न लागें,
आपरो लगायों पापज लागें।दूसरों के लगाने से पाप नहीं
लगता। अपना लगाया हुआ
ही पाप लगता है।

- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

● वर्ष 27 ● अंक 13 ● 29 दिसंबर 2025 - 04 जनवरी 2026



प्रत्येक सोमवार

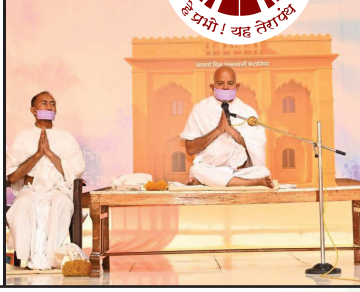
● प्रकाशन तिथि : 27-12-2025 ● पेज 16

₹ 10 रुपये



तेरापंथ की सुषमा और
शोभा का आधार है
मजबूत नींव : आचार्यश्री
महाश्रमण

पेज 02



आचार और विचार की
शुद्धता के लिए स्वामीजी
ने की महा धर्म क्रान्ति :
आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 14

Address
Here

महाचरण का सप्तम दिवस : आचार्य भिक्षु की शिष्य संपदा

आज्ञा पालन में ना हो कोई विचार : आचार्यश्री महाश्रमण

कंटालिया।

21 दिसंबर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के सातवें दिवस का कार्यक्रम युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के महामंत्रोच्चार के साथ प्रारंभ हुआ।

सर्वप्रथम साध्वी शरदयशा जी ने गीत का संगान किया। तत्पश्चात् आज के निर्धारित विषय “आचार्य भिक्षु की शिष्य संपदा” विषय पर मुनि सिद्धकुमार जी ने विचाराभिव्यक्ति दी। महामना आचार्य श्री भिक्षु के परम्पर पट्टधर, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने चतुर्विध धर्मसंघ को अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म एक ऐसा कल्पवृक्ष तुल्य तत्त्व है जिससे बढ़िया-बढ़िया फल प्राप्त हो सकते हैं। इस कल्पवृक्ष से क्या नहीं प्राप्त होता है? बहुत बढ़िया राज्य, अच्छा परिवार, अच्छे पुत्र मिलना; अच्छा रूप, चातुर्य, स्वर होना, शरीर में निरामयता, गुण, सज्जनता, अच्छे विचार आदि धर्म से प्राप्त हो सकते हैं। अच्छे शिष्यों का



योग भी धर्म से प्राप्त होता है। भाग्य का योग होता है तो अच्छे शिष्यों की अनुकूलता प्राप्त होती है।

आचार्य भिक्षु ने दो संतों को दीक्षा पर्याय में अपने से बड़ा रखा तो दोनों संतों की भी स्वामीजी के प्रति शालीनता, विनयशीलता व प्रमोदभावना रही। स्वामीजी ने उन संतों को मान सम्मान दिया तो उन संतों ने भी स्वामीजी का मान किया।

तेरापंथ धर्मसंघ की आदि में दो संत मुनि थिरपाल जी और मुनि फतेहचंद जी क्रमांक एक व दो पर हैं। इनके साथ बहुत ही अच्छी शिष्य संपदा आचार्य भिक्षु की थी। आचार्य को यदि अच्छी शिष्य संपदा प्राप्त होती है तो आचार्य के भी अनुकूलता रहती है और उन्हें थोड़ी निश्चिंतता भी रह सकती है।

साधु-साध्वियों में भी ऐसा समर्पण भाव हो

कि आचार्य बिना पूछे उन्हें जहां भी भेजना चाहें, वहां उनको भेज दें और शिष्य में भी इतना समर्पण हो कि आचार्य श्री की किसी भी आज्ञा का पालन करने में कोई विचार नहीं करना, यह बहुत अच्छी बात हो सकती है। धर्मसंघ के सभी साधु-साध्वियों में योग्यता का विकास होता रहे, यह काम्य है। विश्व ध्यान दिवस के संदर्भ में साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने चतुर्विध धर्मसंघ को कुछ समय तक ध्यान का प्रयोग करवाया। साध्वी कीर्तिलता जी ने अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ संवाद की प्रस्तुति दी और गीत का संगान किया। ईशु और जियाना ने अपनी बालसुलभ प्रस्तुति दी। संजय मरलेचा, महेन्द्र मरलेचा ने अपनी प्रस्तुति दी।

पवन अग्रवाल ने ‘भिक्षु आराधना’ पुस्तक का पूज्य प्रवर के समक्ष विमोचन किया। सहाड़ा विधायक लादुलाल पीतलिया ने भी अपनी भावनाएं अभिव्यक्त की। उन्होंने गंगापुरवासियों के साथ चातुर्मास की प्रार्थना भी की। पूर्व न्यायाधीश गौतम चौरडिया ने अपनी भावविशेषता दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

महाचरण का अष्टम दिवस : आचार्य भिक्षु की साहित्य संपदा

हमारा मार्ग प्रशस्त कर रहा है भिक्षु साहित्य : आचार्यश्री महाश्रमण

कंटालिया।

22 दिसंबर, 2025

भिक्षु चेतना वर्ष के महाचरण के आठवें दिवस का कार्यक्रम का शांतिदूत, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम साध्वी मैत्रीयशाजी व साध्वी ख्यातयशाजी ने गीत का संगान किया। आज के निर्धारित विषय “आचार्य भिक्षु की साहित्य संपदा” पर मुनि नमन कुमार जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

अखण्ड परिव्राजक आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपनी पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म के तीन आयाम हैं - अहिंसा, संयम और तप। तीसरे आयाम तप के बारह प्रकार उपलब्ध होते हैं उनमें दसवां प्रकार है - ‘स्वाध्याय’। स्वाध्याय पांच रूपों में हो सकता है - वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा व धर्मकथा। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि धर्मकथा या प्रवचन देने से पूर्व वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा या चिंतन-मनन का होना आवश्यक होता है। एक



अहंता आने के बाद धर्मकथा होती है तो वह प्रभावशाली भी हो सकती है। अच्छी तैयारी और चिंतन-मनन के बाद यदि

धर्मकथा की जाती है तो उस धर्मकथा में जीवंतता आ सकती है। स्वाध्याय में साहित्य भी सहायक बनता है। साहित्य

के दो रूप हो सकते हैं एक गुरु परंपरा से चला आ रहा अप्रकाशित साहित्य और दूसरा लिखित रूप अर्थात् प्रकाशित साहित्य। एक समय था जब हमारे आगम लिखित रूप में नहीं थे परन्तु बाद में इन्हें लिपिबद्ध करने की व्यवस्था हुई। आज यदि हमारे पास लिपिबद्ध आगम साहित्य नहीं होता तो अध्ययन करने और ज्ञान प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती थी।

आगम साहित्य का अपना गरिमापूर्ण स्थान है। हमारे धर्मसंघ की चारित्रात्माओं द्वारा कितने ग्रन्थों की लिपियां तैयार की गई होंगी।

(शेष पेज 13 पर)

महाचरण का षष्ठम दिवस : आचार्य भिक्षु और तेरापंथ की स्थापना

तेरापंथ की सुषमा और शोभा का आधार है मजबूत नींव : आचार्यश्री महाश्रमण

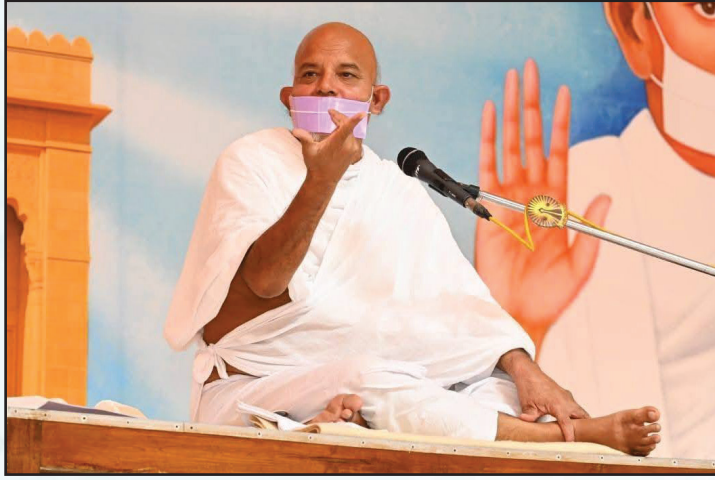
कंटालिया।

20 दिसंबर, 2025

आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के महाचरण के छठे दिवस के कार्यक्रम का शुभारंभ वर्तमान अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ 'भिक्षु समवसरण' कंटालिया में हुआ। साध्वी शारदाश्रीजी आदि साध्वियों ने गीत का संगान किया। आज के निर्धारित विषय 'आचार्य भिक्षु और तेरापंथ की स्थापना' विषय पर मुनि योगेश कुमारजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

तदुपरान्त जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समुपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ को मंगल संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म वह तत्त्व है जो व्यक्ति को दुर्गति से बचा सकता है और शुभ स्थान में स्थापित कर सकता है। धर्म परम मंगल तत्त्व होता है। देव भी ऐसे व्यक्ति को नमन करते हैं जिसका मन धर्म में रमा हुआ होता है। धर्म ऐसा तत्त्व है जो व्यक्ति को पूजनीय बना देता है।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष और भिक्षु चेतना वर्ष चल रहा है और



महाचरण की आयोजना प्रवर्द्धमान है। तेरापंथ की स्थापना आचार्य भिक्षु की 'नव्य भव्य दीक्षा' ग्रहण करने के साथ हुई, नये सिरे से साधुपन लेने के रूप में हुई। प्रश्न हो सकता है कि उन्होंने नए सिरे से साधुपन क्यों लिया? इसका उत्तर यह है कि उन्होंने यह माना कि पूर्व अवस्था में शुद्ध साधुपन था ही नहीं, इसीलिए नए सिरे से 'नव्य भव्य दीक्षा' स्वीकार करनी पड़ी। तेरापंथ की स्थापना केलवा में हुई परन्तु इसके साथ ही एक चिन्तन यह भी है कि अन्यत्र प्रवासित साधुओं ने भी संभवतः उसी दिन नव्य भव्य दीक्षा ली थी अतः उसको भी तेरापंथ की स्थापना के साथ जोड़ा जा सकता है।

तेरापंथ की नींव या स्थापना के छः पिलर (स्तम्भ) थे जिनमें एक मुख्य स्वामीजी और अन्य पांच संत थे। स्वामीजी में तो मनोबल था ही परन्तु उन कठिन परिस्थितियों में उन पांच संतों का स्वामीजी के साथ रहना भी कितना साहसिक कार्य रहा। अतः तेरापंथ की स्थापना में इनका भी योगदान कम नहीं माना जा सकता। व्यक्ति रूप में ये स्तंभ हैं पर व्यक्ति हमेशा नहीं रहता पर सिद्धान्त, प्रारूप, ढांचा लम्बे काल तक रहता है।

हमारे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की सुषमा, शोभा व मजबूती है उसमें कुछ नींव के पत्थर हैं जिनके आधार पर आज भी तेरापंथ का ढांचा काफी

व्यवस्थित है। इनमें एक महत्वपूर्ण नींव का पत्थर है, आचार्य भिक्षु द्वारा एक आचार्य की परंपरा की नींव रखना कि 'सर्व साधु-साध्वी एक आचार्य की आज्ञा में रहें।' यह परम्परा दस दशकों के पूर्ण होने तथा दूसरे दशक के प्रारंभ होने अर्थात् आज तक चली आ रही है। एक आचार्य की व्यवस्था, तेरापंथ की एकता, अक्षुण्णता और व्यवस्थितता में अपना एक योगदान है। भावी आचार्य का निर्णय करने का अधिकार वर्तमान आचार्य का ही होता है, इससे भी संघ की एकता में सहयोग मिलता है। साधु-साध्वियों का विहार, चातुर्मास कहाँ होगा, इसका निर्णय भी आचार्य ही करते हैं, इससे श्रावक समाज भी एकजुट रहता है क्योंकि श्रावक समाज अलग-अलग संतों या साध्वियों के साथ एकदम जुड़ जाए यह संभावना भी कम है क्योंकि अंतिम निर्णय आचार्य का ही होता है।

अगली बात है कि दीक्षा योग्य व्यक्ति को ही दी जाती है, मात्र संख्या बढ़ाने के लिए नहीं। संघ से अलग हो जाने वाले को प्रश्रय नहीं देना भी एकजुटता का सूत्र है। यह मर्यादा-व्यवस्थाएं आज भी सुचारू रूप से संचालित हैं। एक नेतृत्व के होने से एकता का सूत्र मानो कितना सुदृढ़ है। यह नियति का ही योग है

कि संघ की सारी मर्यादाएं अच्छे ढंग से चल रही हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में सेवा केन्द्रों आदि की व्यवस्था भी कितनी सुदृढ़ता प्रदान करने वाली है। हम सभी साधु-साध्वियां अपनी साधना को आगे बढ़ाते हुए अपने धर्म संघ की सुषमा को जितना बढ़ा सकें, बढ़ाने का प्रयास करें, यह काम्य है।

आचार्य प्रवर ने आज भी साधु-साध्वियों, समणियों को जिज्ञासाएं प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया एवं उन्हें समाहित किया।

मुनि अजितकुमारजी ने आचार्यश्री से अठाई की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। साध्वी काव्यलताजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी और सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन माण्डोट ने अपनी अभिव्यक्ति में 54 दिवसीय अखण्ड जप तथा आचार्यश्री की मार्ग सेवा में सत्कार ऑन व्हील बस के संदर्भ में जानकारी दी। तेरापंथ महिला मंडल चेन्नई की अध्यक्षा सुमन मरलेचा ने गीत की प्रस्तुति दी। तारा मरलेचा और कविता सेठिया ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

महाचरण का चतुर्थ दिवस : आचार्य भिक्षु का गृहत्याग जीवन

वह शिष्य उपलब्धिमान है जिस पर गुरु विश्वास करते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

कंटालिया।

18 दिसंबर, 2025

आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के महाचरण के चतुर्थ दिवस के कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ धर्म संघ के एकादशमाधिशास्ता, शांतिदूत, महातपस्वी, आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि ध्रुवकुमारजी ने गीत का संगान किया। तत्पश्चात् निर्धारित विषय - 'आचार्य भिक्षु का गृहत्याग जीवन' पर मुनि दिनेश कुमारजी ने अपनी विचारभिव्यक्ति दी।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म साधना में क्षमता के संदर्भ में धर्म के

दो विभाग हो जाते हैं - अगर धर्म और अणगार धर्म। घर में रहते हुए धर्म की साधना करना अगर धर्म है और गृहत्याग करके धर्म की आराधना करना अणगार धर्म है।

श्रावक साधना करता है, बारह व्रती बन जाता है वह अगर धर्म की साधना है और जब व्यक्ति घर से अभिनिष्क्रमण कर दे और सर्व सावद्य त्याग रूप साधुत्व स्वीकार कर ले वह गृहत्याग रूप में धर्म की आराधना का क्रम हो जाता है।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के संदर्भ में गृहत्याग जीवन से यहां हम तेरापंथ की स्थापना से पूर्व का गृहत्याग रूप जीवन को विवक्षित कर सकते हैं। गृहस्थ जीवन में भी आचार्यभिक्षु का त्याग और साधना का क्रम रहा, फिर उन्होंने



गृहत्याग कर दिया और जैन शासन के एक आम्नाय में वे दीक्षित हो गए। कुछ वर्षों का उनका जो गृहत्याग के जीवन का काल रहा उसमें अपने गुरु का विश्वासपात्र बन जाना एक उपलब्धि मानी जा सकती है। शिष्य अनेक हो सकते हैं परन्तु सारे

शिष्य एक समान हों यह आवश्यक नहीं है। वह शिष्य उपलब्धिमान है जिस पर गुरु विश्वास करते हैं और आश्वस्त हो जाते हैं। ऐसे शिष्य जो कुछ ही समय में गुरु के लिए आलम्बन बन जाते हैं, उनकी विशेष प्रतिभा हो सकती है। गुरु के प्रति

उनकी निष्ठा होती है और गुरु की उनके प्रति निष्ठा होती है। निष्ठा दोनों तरफ से हो सकती है। आचार्य भिक्षु अपने गुरु के लिए आश्वसनभूत बन गए। राजनगर की घटना के संदर्भ में आचार्य भिक्षु अपने गुरु का आलम्बन बने।

आचार्य भिक्षु ने गृहत्याग जीवन में अपने गुरु की निष्ठा में शास्त्रों का स्वाध्याय किया। आचार्य भिक्षु के स्वाध्याय में उनकी बौद्धिकता, चिंतन की तीक्ष्णता, तर्कशीलता का होना विशेष बात है। स्वाध्याय में, ज्ञानार्जन में तर्क पैदा होना, प्रश्न उठाना स्वाध्याय का एक विभूषण होता है। आचार्य भिक्षु के गृहत्याग जीवन के काल में उनके जैसी प्रतिभा और प्रज्ञा हर किसी में हो यह आवश्यक नहीं है।

(शेष पेज 13 पर)

आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर का हुआ उद्घाटन

उधना।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, उधना द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर का जैन संस्कार विधि से पुनः उद्घाटन (Re-Opening) भेस्तान उधना में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मंडोत, राष्ट्रीय महामंत्री सौरभ पटावरी, सहमंत्री पवन नोलखा, प्रवृत्ति सलाहकार सुनील चंडालिया एवं अन्य अभातेयुप सदस्य सहित अन्य पदाधिकारी एवं सदस्यगण की उपस्थिति में शुभारम्भ हुआ। परिषद द्वारा सेवा-भावना को दृष्टिगत रखते हुए इसे प्रारंभ किया गया। कार्यक्रम का स्वागत



वक्तव्य तेरापंथ युवक परिषद उधना के अध्यक्ष कमलेश बाफना द्वारा प्रस्तुत किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मंडोत ने अपने संबोधन में विविध

बिंदुओं पर मार्गदर्शन प्रदान करते हुए भविष्य में ए.टी.डी.सी. एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर के बेहतर प्रबंधन एवं विस्तार हेतु उपयोगी सुझाव दिए। राष्ट्रीय महामंत्री सौरभ पटावरी एवं

सहमंत्री पवन नौलखा ने भी अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए परिषद के इस सेवा-उपक्रम की सराहना की।

जैन संस्कार विधि से मेडिकल स्टोर का उद्घाटन जैन संस्कारक नेमीचंद एवं जसवंत डांगी द्वारा संपन्न कराया गया। तेरापंथ सभा उधना मंत्री मुकेश बाबेल, भेस्तान सभा अध्यक्ष व मंत्री, महिला मंडल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों की भी गरिमामयी उपस्थिति रही।

तेरापंथ युवक परिषद उधना से भी प्रमुख पदाधिकारियों एवं सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का सफल संचालन तेरापंथ युवक परिषद उधना के मंत्री अनिल सिंघवी द्वारा किया गया।

गुणानुवाद सभा का भव्य आयोजन

गंगाशहर।

युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी, शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी, सेवा केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी, साध्वी लब्धियशा जी, साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में वयोवृद्ध शासनश्री साध्वी ज्ञानवती जी की गुणानुवाद सभा शान्ति निकेतन सेवा केन्द्र गंगाशहर में आयोजित की गई।

शासनश्री साध्वी ज्ञानवती जी का 89 वर्ष की अवस्था में देवलोकगमन हो गया था।

आपने आचार्य श्री तुलसी से 03 फरवरी 1958 को संयम जीवन ग्रहण किया था। आपने 68 वर्ष साध्वी जीवन - संयम जीवन जीया।

उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी ने कहा कि शासनश्री साध्वी ज्ञानवती जी आगमज्ञ तत्वज्ञ के साथ समयज्ञ थी। उन्होंने दीर्घकालीन

संयम जीवन को समता सहिष्णुता स्वाध्याय ध्यान से सफल बनाया। उनके भावों के निर्मलता और व्यवहार में निश्चलता के कारण सबके साथ अपनत्व भाव देखने को मिला। गंगाशहर में उनके संयम काल का अधिक समय लोगों को मिला सब उनकी सरलता से प्रसन्न थे।

उन्होंने तीन आचार्यों का, तीन साध्वी प्रमुखाओं का शासन काल देखा सबसे उनको आदर भाव प्राप्त हुआ। आज स्मृति सभा में यह कामना करता हूँ कि वे उत्तरोत्तर विकास करती हुई चरम लक्ष्य को प्राप्त करें।।

मुनि श्रेयांस कुमार जी ने दोहों के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

सेवा केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने ज्ञानवती जी के गुणानुवाद सभा में अपने भाव रखते हुए कहा कि उनके भीतर प्राणी मात्र के प्रति आत्मियता, वात्सल्य, करुणा का भाव था। उनकी आत्मा के ऊर्ध्वारोहण की कामना की।

साध्वी लब्धियशा जी ने साध्वी ज्ञानवती जी के बारे में बोलते हुए कहा कि जिंदगी एक राह गुजर है, राही आते हैं चले जाते हैं कोई वीरले राही होते हैं, जो यादों में बस जाते हैं। सेवा केन्द्र शान्तिनिकेतन में सेवाग्रही साध्वी के रूप में आपका सर्वप्रथम स्थान था।

साध्वी जिनबाला जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि चाहे वस्तु हो या व्यक्ति जब तक उपयोगी है तब तक उनका मुल्य है, मान - सम्मान है। जो व्यक्ति अंतिम समय तक अपनी उपयोगिता बनाये रखते हैं, वह आदरणीय होते हैं। शासन श्री ज्ञानवती जी ने अपनी उपयोगिता अन्त समय तक कम नहीं होने दी, अपनी उपयोगिता बनाये रखी।

साध्वी श्री विधिप्रभा जी अपने विचार रखते हुए कहा कि तेरापंथ समाज में ज्ञानवती जी को माता जी के नाम से पहचान थी। उनसे माँ के समान प्यार, स्नेह मिलता था।

साध्वी शीतलरेखा जी ने साध्वी ज्ञानवती जी को आचारनिष्ठ, संघनिष्ठ, गुरुनिष्ठ साध्वी बताया। साध्वी कंचनबाला जी ने उनके साथ बिताये गये समय को बहुत ज्ञानवर्धक बताया।

साध्वी श्री कौशलप्रभा जी ने कहा कि हमें खुशी है कि यहाँ की चाकरी में अनुभव व ज्ञान का खजाना मिलता है। सबको अपना बनाने में प्रमोद भावना का गुण सबसे महत्वपूर्ण है। शासन श्री साध्वी ज्ञानवती जी में प्रमोद भावना, वात्सल्य, अपनेपन का विशिष्ट गुण था। गुणानुवाद सभा में संसारपक्षीय परिवार से श्वेता महनोत ने अपने विचार व्यक्त किये।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा से पवन छाजेड़, महिला मंडल से संजू लालाणी, तेयुप से रोहित बैद, शान्तिप्रतिष्ठान से किशन बैद, अणुव्रत समिति से मनीष बाफना एवं राखी चोरडिया आदि कार्यकर्ताओं ने अपने भावों से श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

स्थापना दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित

कोलकाता। जैन कार्यवाहिनी

कोलकाता का स्थापना दिवस कार्यक्रम महासभा भवन के भिक्षु ग्रंथागार में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जैन कार्यवाहिनी कोलकाता की भिक्षु भजन मंडली द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत वक्तव्य संयोजक पंकज दुधोडिया ने दिया। वार्षिक प्रतिवेदन का वाचन संयोजक रंजीत सेठिया ने किया।

जैन कार्यवाहिनी के समन्वयक महेन्द्र दुधोडिया ने संबोध यात्रा व जैन कार्यवाहिनी के आय-व्यय की जानकारी दी। बहुश्रुत परिषद के मुनि उदित कुमार जी द्वारा प्राप्त संदेश का वाचन संयोजक हिम्मत बरडिया ने किया।

संयोजक राजकुमार भादानी ने जागरूक, डायरी लिखने एवं तपस्या करने वाले कार्यवाहकों के नामों की घोषणा की। यहाँ चुनाव की प्रक्रिया नहीं है इस वर्ष 2 नए संयोजक श्री हिम्मत बरडिया के स्थान पर श्री नवीन दुगड़ व श्री रंजीत सेठिया के स्थान पर श्री डालम गिडिया के नाम की घोषणा जैन कार्यवाहिनी के समन्वयक श्री महेन्द्र दुधोडिया ने किया।

कार्यक्रम में संबोध यात्रा के दौरान टी-शर्ट, सामायिक किट, प्रसाधन किट एवं आर्थिक सहयोग करने वाले कार्यवाहकों, संबोध यात्रा संयोजक, 2 पूर्व संयोजक, जागरूक कार्यवाहक, तपस्या करने वाले कार्यवाहक, डायरी लेखन वाले कार्यवाहक एवं जैन कार्यवाहिनी की भिक्षु भजन मंडली वालों को सम्मानित किया गया। मंच का कुशल संचालन हाजरी संयोजक प्रदीप बैद ने तथा आभार ज्ञापन संयोजक पंकज दुधोडिया ने किया।

भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस समारोह का आयोजन

साउथ कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस समारोह एवं अनुष्ठान का आयोजन साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन

में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - भगवान पार्श्व भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल नक्षत्र थे। वे अप्रतिम ज्ञान के धारक थे। वे करुणा व समता के सागर थे। उन्होंने समाज में फैले हुए अंधविश्वास एवं अज्ञान पर जबरदस्त प्रहार कर तत्कालीन

जन समूह को सही राह दिखाई उन्होंने चातुर्याम धर्म का प्रवर्तन किया। उन्होंने विभिन्न देशों में भ्रमण कर सत्य धर्म का प्रकाश फैलाया। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ तेरापंथ महिला मंडल साउथ कलकत्ता के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण साउथ सभा के अध्यक्ष विनोद

चोरडिया ने दिया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया। कार्यक्रम से पूर्व उपसर्गहर स्तोत्र व पार्श्व मंत्रों का जप अनुष्ठान किया गया। इसी दिन 'ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय नमः' मंत्र का तेरह घंटे दम्पति जप भी आयोजित किया गया। अनेक भाई-बहनों ने उपवास, बेला, तेल तप का प्रत्याख्यान भी किया।



संक्षिप्त खबर

भवसागर को पार लगाने सामायिक जहाज है

बड़ोदरा। आचार्यश्री महाश्रमण जी विदुषी शिष्या डा. साध्वी परमयशजी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का समायोजन हुआ। डा. साध्वी परमयशजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सामायिक पॉजिटिव एटीट्यूड की अद्भुत साधना है। सक्सेसफुल लाइफ का उन्मेष है अभिनव सामायिक। कॉन्फिडेंस पावर को बढ़ाता है। सामायिक से 92 करोड़ 59 लाख 25 हजार 925 पल्योपम के अशुभ कर्म दूर होते हैं। विश्व की समस्याओं का समाधान संभव है। 48 मिनट की सामायिक से 84 लाख के अशुभ कर्म दूर होते हैं। पूर्णिया श्रावक जैसी कुछ समतामय सामायिक करें। डा. साध्वी परमयशजी, विनम्रयशजी, मुक्ताप्रभाजी और कुमुदप्रभा जी ने आडम्बर से प्रदर्शन से दूर रहना सिखलाती गीत का संगान किया। अभिनव सामायिक में तेरापंथ युवक परिषद के दीपक श्रीमाल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

त्रिदिवसीय प्रवास का सफल आयोजन

दुबई। आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्याएँ समणी डॉ. मंजु प्रज्ञा एवं समणी स्वर्ण प्रज्ञाजी के सान्निध्य में पहली बार रस अल खैमाह में समणीजी का त्रिदिवसीय सफल प्रवास सम्पन्न हुआ। इस प्रवास के अंतर्गत त्रिदिवसीय वर्कशॉप का आयोजन किया गया। जिसमें हेल्थ कैप, कलर थेरेपी, एक्स्प्रेसर तथा जैन धर्म से संबंधित विविध विषयों पर समणी जी ने गहन एवं प्रेरक विचार प्रस्तुत किए। जैन समाज के अतिरिक्त अग्रवाल परिवारों ने भी समणीजी से लाभ प्राप्त किया। सभी का उत्साह एवं सहभागिता अत्यंत सराहनीय रही। आयोजन की योजना एवं व्यवस्थापन में उपासक दिनेश कोठारी का सहयोग भी महत्वपूर्ण रहा।

ध्यान दिवस का आयोजन

टोहाना। विश्व ध्यान दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ भवन टोहाना में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के मंत्री सुभाष जैन की अध्यक्षता में एवं प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देश अनुसार एवं प्रेक्षा वाहिनी के तत्वावधान में ध्यान दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा मंत्री सुभाष जैन, प्रेक्षा वाहिनी संवाहिका उषा जैन ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का आभारी है जिन्होंने प्रेक्षाध्यान के माध्यम से लाखों लोगों को मानसिक रोगों से विशेष कर अवसाद से मुक्ति दिलाई। इस ध्यान कक्षा में सभा के मंत्री सुभाष जैन इत्यादि ने भाग लिया।

प्रेक्षाध्यान पद्धति अशांत मानव के लिए उपयोगी

जोधपुर। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या शासनश्री साध्वी जिनरेखाजी, साध्वी सम्पूर्णयशजी एवं साध्वी मेघप्रभाजी आदि ठाणा-13 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन, अमरनगर, जोधपुर में विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर साध्वी मेघप्रभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रतिपादित प्रेक्षाध्यान पद्धति आज के अशांत मानव के लिए अत्यंत उपयोगी है। साध्वी सम्पूर्णयशजी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान के प्रयोग से व्यक्ति अंतर की वृत्तियों में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है तथा मानसिक तनाव से मुक्त जीवन की ओर अग्रसर हो सकता है। प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका रणजीता जैन ने साधकों को समताल श्वास प्रेक्षा का प्रयोग कराते हुए कहा कि यदि प्रेक्षाध्यान को जीवन का नियमित अंग बनाया जाए, तो शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक संतुलन सहज रूप से प्राप्त किया जा सकता है। सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, महिला मंडल अध्यक्षा अर्चना बुरड, टी.पी. एफ. अध्यक्ष महेन्द्र मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर सभा मंत्री महावीर चोपड़ा, सभा संगठन मंत्री रतन चोपड़ा आदि की गरिमामय उपस्थिति रही।

प्रेक्षा ध्यान की मनाई गई स्वर्ण जयंती

न्यू जर्सी।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या, समणी समत्व प्रज्ञा जी एवं समणी अभय प्रज्ञा जी की सान्निध्य में आयोजित ये कार्यक्रम प्रेक्षा ध्यान की पचास वर्षों की यात्रा का स्मरण और उसके व्यापक प्रभाव का उत्सव था। पचास वर्ष पूर्व, परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने मानवता को प्रेक्षा ध्यान के रूप में एक गहन, वैज्ञानिक और अनुभवजन्य साधना का मार्ग दिया।

यह साधना केवल आत्मिक शांति तक सीमित नहीं रही, बल्कि जीवन को देखने और जीने की दृष्टि बनी, जिसमें न्यूजर्सी स्टेट के एडीसन, चेरी हिल, फ्रैंकलिन टाउन, प्रिंसटन सिटी, क्रेसकिल, परसिपनी, ब्रूनसिक, वूडब्रिज आदि अनेक प्रांतों से तथा न्यूयॉर्क, डेलावेर, मियामी, मेरीलैंड आदि अमेरिका के अनेक स्टेट्स से लगभग 550 जनों ने सहभागिता की। इसमें Columbia University से Data

scientist प्रोफ. सिद्धार्थ दलाल भी उपस्थित थे जिन्होंने कहा- 'It was one of the most beautiful programs I have ever attended. Somehow, Preksha Meditation touched my inner space, refined my year, and left me with clarity, calm, and lasting inspiration. Jain Center of America के ट्रस्टी सुनील जी डागा के उद्गार कुछ इस प्रकार थे - 'It was an honor to attend the 50th Anniversary celebration of Preksha Meditation, a beautifully organized program that deeply reflected the clarity, discipline, and transformative spirit of Preksha Meditation, leaving a lasting impression on everyone present. इस अवसर पर International Jain Sangh के प्रेसिडेंट हिमांशु जैन, Jain Samaj of

Long Island के प्रेसिडेंट मीता साह, Jain Center of New Jersey के ट्रस्टी राजुल बेन साह, तथा न्यू-यॉर्क से स्पेशल गेस्ट के रूप में कई मुख्य बिजनस लीडर्स भी शामिल थे।

इस भव्य आयोजन में भरतनाट्यम के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार गीत की प्रस्तुति, प्रेक्षा के भाव को व्यक्त करता एक विषयगत नाटक, समणी जी के साथ संवादात्मक प्रश्नोत्तर सत्र, प्रेक्षा ध्यान का प्रयोगात्मक अभ्यास, योग प्रदर्शन, कला प्रदर्शनी तथा JVB द्वारा प्रकाशित प्रेक्षा ध्यान से संबंधित पुस्तकों का स्टॉल शामिल था।

मार्गदर्शित ध्यान सत्र के दौरान सम्पूर्ण सभा ने आंतरिक शांति और सजगता का गहन अनुभव किया। JVB New Jersey के चेयरमैन सुरेन्द्र जी कांकरिया तथा अध्यक्ष विनोद आंचलिया की अध्यक्षता में, सम्पूर्ण Executive Committee एवं उनकी समर्पित टीम के प्रयासों से यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हो सका।

पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक महोत्सव का आयोजन

नेल्लोर, आंध्रप्रदेश।

पुरुषादानीय भगवान पार्श्वनाथ का 2901वां जन्म कल्याणक दिवस मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य तथा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, किलपाँक के तत्वावधान में काकटूर जैन तीर्थ, नेल्लोर, आंध्रप्रदेश में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र से हुआ। दिवस के प्रारम्भ में आचार्य तुलसी द्वारा रचित पार्श्वनाथ स्तुति का संगान मुनि भव्य कुमार जी ने किया।

भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक

दिवस पर अपने भावों की प्रस्तुति करते हुए मुनि जयेशकुमारजी ने प्रभु पार्श्वनाथ की महिमा 24 तीर्थंकरों के मध्य अलग वैशिष्ट्यता लिये हुए क्यों है इसे अनेक सारपूर्ण तथ्यों और उदाहरणों से स्पष्ट किया। इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमारजी ने कहा- भगवान पार्श्वनाथ के जीवन में संवेदनशीलता और करुणा का भाव था।

उन्होंने स्वयं पर आने वाले उपसर्गों को करुणा से अभिभूत बन उन्हें तिरोहित किया। भगवान पार्श्व का प्रभाव जीवन के कष्टों के निवारण का बहुत बड़ा आधार

है। जैन परम्परा से जुड़े शताब्दियों पूर्व हुए आचार्यों ने भगवान पार्श्व की स्तुति में अनेकानेक स्तोत्रों का निर्माण किया। जो आज भी भक्त जनों के कष्टों का निवारण करता है।

भगवान पार्श्व जन्म कल्याणक दिवस के उपक्रम में मुनि श्री ने विघ्नहर अनुष्ठान को प्राकार देते हुए अनेक मंत्रों को सह संगान करवाया। किलपाँक सभा उपाध्यक्ष धर्मीचंद जी छल्लाणी ने विचार रखे। कार्यक्रम की सफल संयोजना में किलपाँक सभा सहमंत्री अशोक आच्छा आदि सदस्यों का योगदान रहा।

अभिनन्दन समारोह हुआ आयोजित

गंगाशहर।

तेरापंथ भवन में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के पावन सान्निध्य में दीक्षार्थी बहन खुशी सुराणा घणा का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि यह संघ हितेशी परिवार की सदस्या है परिवार के अनेक सदस्य धर्मसंघ में दीक्षित हैं। यहां शासनश्री शशी रेखा जी के साथ साध्वी शीतलयश जी इनकी संसार पक्षीया

मासीजी है। सेवा केन्द्र में सेवा ग्राही साध्वी कांताश्री जी भी नातीली है खुशी ने लगभग चार वर्षों तक पा.शि.संस्था में अध्ययन कर अपने अपने आपको परिपक्व बनाया है।

यह परम सौभाग्य की बात है कि योगक्षेम वर्ष के प्रारंभ में प्रथम दीक्षा महोत्सव पर इसकी दीक्षा हो रही है इसके लिए मंगल कामना करता हूँ कि पूर्ण जागरूकता से महाव्रतों समिति गुप्ति की परिपालना करते हुए गुरु दृष्टि का पालन करती रहे विनय सहिष्णुता

का अभ्यास क्रमशः वर्धमान रहे। इस अवसर पर मुमुक्षु खुशी ने अपने विचारों को प्रगट करते हुए सबके प्रति आभार ज्ञापन किया मुनि श्रेयांस कुमार जी ने शासन गौरव मुनि मधुकरजी स्वामी द्वारा रचित गीत का संगान किया सभा के सक्रिय मंत्री जतन जी संचेती ने भी पूरे तेरापंथ समाज की तरफ से मंगल भावना व्यक्त की मुनि श्री ने कहा कि पोष महिने में भी तपस्या का क्रम वर्धमान है मेरे अनन्य सहयोगी मुनि नमि कुमार जी के आज 30 की तपस्या है।

सुख शांति दायक है प्रभु पार्श्वनाथ का नाम

राजराजेश्वरी नगर।

युगप्रधान, शांतिदूत, महातपस्वी, आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान की पार्श्व जयंती का आयोजन राजराजेश्वरी नगर के तेरापंथ भवन में किया गया। साध्वीश्री जी ने प्रभु पार्श्व की अति महिमा, प्रसिद्धि व प्रभावना का कारण बताते हुए कहा- प्रभु पार्श्व ने अनेक जीवों का कल्याण किया।

उनका नाम मात्र जीवन का अंधकार दूर कर देता है, मन के सारे मनोरथ पूर्ण कर देता है। आज भी दुनिया उनके नाम से सुख शांति प्राप्त कर रही है। साध्वी मार्दव जी ने प्रभु पार्श्व को रिझाने

वाला विशिष्ट आध्यात्मिक अनुष्ठान करवाया। साध्वीजी ने कहा मंत्र शक्ति से मन को एकाग्र कर हम अपनी प्राण उर्जा को एक आराध्य पर केन्द्रित करके उस शक्तिशाली प्रभुता संपन्न प्रभु की सकारात्मक उर्जा व पवित्रता से संपर्क साध कर स्वयं भी प्रभुता संपन्न बन जाते हैं।

तेरापंथी सभा, युवक परिषद, महिला मंडल ने पार्श्व स्तुति से सामूहिक मंगलाचरण किया। राजराजेश्वरीनगर के सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़ एवं विजयनगर सभा के अध्यक्ष मंगल कोचर ने प्रभु पार्श्व देव के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री गुलाब बाँटिया एवं आभार ज्ञापन तेषुप अध्यक्ष विक्रम महेर ने किया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का हुआ आयोजन

हैदराबाद।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में प्रेक्षा वाहिनी हैदराबाद द्वारा प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन हिमायतनगर में किया गया। प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का शुभारम्भ रीता सुराणा व प्रेम संचेती ने मंगल भावना से किया।

इस अवसर पर वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक विमल गुनेचा दिल्ली से समागत ने यौगिक क्रियाएं, आसान आदि के प्रयोग करवाये, साथ ही साथ इनसे होने वाले फायदे भी बतलाए। आपने बताया की हमारा अस्तित्व दो तत्वों का सहयोग है - जीव - अजीव, आत्मा और शरीर,

चेतना और पुदगल, और इनके बारे में भी जानकारी दी। हम शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक तनाव से कैसे मुक्त हो सकते हैं बताया। ॐ की ध्वनि के साथ दीर्घ श्वासप्रेक्षा का प्रयोग करवाया गया। विमल ने यहा के प्रेक्षा वाहिनी की भूरी भूरी प्रशंसा की व और इसको आगे बढ़ाने को कहा, प्रेक्षा ध्यान शिविर की जानकारी दी। संतोष पिंका का विशेष सहयोग रहा। सिकंदराबाद सभा अध्यक्ष सुशील संचेती, अणुव्रत समिति के तेलंगाना प्रभारी आलोक डागा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा आदि गणमान्य श्रावक उपस्थित थे। आभार ज्ञापन प्रेम संचेती ने किया।

‘आओ नींद को अपनी ताकत बनाएं’ कार्यशाला आयोजन

कोयंबटूर।

तेरापंथ भवन में 46 सदस्यों की सहभागिता में हुई। तेमम अध्यक्षा रूपकला भंडारी ने सबका स्वागत किया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका मधु बाँटिया ने

कायोत्सर्ग द्वारा विशेष relaxation करवाया। खुशी दूधेडिया ने निद्रा में उपयोगी योगासन का प्रशिक्षण दिया। प्रातः कालीन सुखद वातावरण में यह कार्यशाला सानंद संपन्न हुई। मंत्री रेखा मरोठी ने सब का आभार प्रकट किया।

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

— आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि



नूतन गृह प्रवेश

- **सूरत।** पदराडा निवासी सूरत प्रवासी दर्श राकेश बाफना के नूतन गृह प्रवेश का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष मालू, विनीत श्यामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।
- **सूरत।** सेमड निवासी सूरत प्रवासी प्रीति जैन के सुपुत्र दीप व जीत का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, विनीत श्यामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।
- **जयपुर।** निकिता - महेन्द्र दुगड़ के नूतन आवास A-1102, विराट कृष्णव, नियर रंगोली गाँउन, वैशाली नगर पश्चिम, जयपुर पर धी संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने मंगल भावना पत्रक स्थापित करवाकर सभी रश्में सम्पन्न करवाई।
- **उदयपुर।** कांता सिंघवी के नवीन फ्लैट में गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक सुबोध दुगड़ द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। भगवान महावीर स्तुति के साथ जैन संस्कार विधि से गृह प्रवेश कार्यक्रम सम्पादित करवाया गया।

पाणिग्रहण संस्कार

- **सूरत।** उदयरामसर निवासी सूरत प्रवासी रंजीत कुमार सिपानी के सुपुत्र रचित सिपानी (स्थानकवासी) का शुभ पाणिग्रहण संस्कार गंगाशहर निवासी सुनील कुमार पुगलिया की सुपुत्री मुस्कान पुगलिया के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, प्रकाश डाकलिया, मनीष कुमार मालू, विनीत श्यामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।
- **सैथिया।** गंगाशहर निवासी सैथिया प्रवासी स्व० तिलोकचंद सुराणा के सुपौत्र एवं स्व० प्रदीप सुराणा- कविता देवी सुराणा के सुपुत्र मुदित सुराणा का शुभ विवाह हरिपुरा निवासी जमशेदपुर प्रवासी स्व० लक्ष्मीनारायण अगीवाल की सुपुत्री एवं संजय कुमार अगीवाल की सुपुत्री भावना अगीवाल के संग जैन संस्कार विधि से हनुमान मंदिर, सैथिया में संस्कारक महेंद्र दुगड़ एवं प्रकाश सुराणा ने विवाह कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

नामकरण संस्कार

- **लिलुआ।** नीतेश-राशि नाहटा (सुपुत्र उपासक अरुण-ममता नाहटा, सरदारशहर निवासी- बेलूड प्रवासी) के पुत्र रत्न का नामकरण जैन संस्कार विधि से बेलूड स्थित निवास स्थान पर जैन संस्कार विधि द्वारा ही श्रेणी संस्कारक पवन बैंगनी और संस्कारक बीरेंद्र बोहरा ने पुरे मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक का हुआ आयोजन

माधावरम, चेन्नई।

आचार्य महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीप कुमार जी ठाणा -2 एवं स्थानकवासी संत कमल मुनि (कमलेश) ठाणा -5 के सानिध्य में 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक महोत्सव का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ माधावरम ट्रस्ट द्वारा किया गया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा- तीर्थंकर जैन धर्म के मुख्य धुरी होते हैं। 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ ऐतिहासिक पुरुष थे। उनका तीर्थ प्रवर्तन भगवान महावीर से 250वर्ष पहले हुआ। अहिंसा और सत्य की साधना को समाज व्यापी बनाने का श्रेय भगवान पार्श्वनाथ को है। भगवान पार्श्वनाथ

अहिंसक परंपरा के उन्नयन द्वारा बहुत लोकप्रिय हुए। इसकी जानकारी हमें उनके लिए प्रयुक्त 'पुरुषादानीय' विशेषण के द्वारा मिलती है। आज के दिन भगवान का वाराणसी में राजा अश्वसेन के महलों में महारानी वामादेवी की कुक्षी से जन्म हुआ। भगवान ने दीक्षा ग्रहण की साधना की उपसर्गों को सहा, मुनि श्री ने आगे कहा -मंत्र शास्त्र में भी भगवान पार्श्व की स्तुति में विपुल मात्रा में मंत्र और स्तोत्र प्राप्त होते हैं। मुनि कमल मुनि ने संदर्भ में कहा- जैन एकता युगकी मांग है। कमल मुनिजी जैन एकता के हिमायती हैं। समन्यवादी हैं। तेरापंथ और श्रमणसंघ दोनों के आचार्यप्रवरो के आत्मीय संबंध हैं। कमल मुनि कमलेश ने कहा- तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने अहिंसा का पावन संदेश दिया। आज देश- दुनिया

से चारों ओर हिंसा का साम्राज्य फैला हुआ उसमें अहिंसा के प्रकाश की बहुत जरूरत है। आचार्य शिवमुनि जी एवं आचार्यश्री महाश्रमण जी दोनों मिलकर जैन एकता का कार्य कर रहे हैं। मुनि काव्य कुमार कुमार जी ने कहा- आज हम एक ऐसे महापुरुष की जन्म जयंती मना रहे हैं जो इस धरती धाम पर एक महामानव के रूप में अवधारित हुए। आज के दिन एक ऐसी महाज्योति प्रज्वलित हुई जिसके तेज से सैकड़ों - सैकड़ों लोगों के कष्टों का नाश हो गया। वह महापुरुष, वह महाज्योति थी भगवान पार्श्वनाथ की। अक्षत मुनि जी ने मुक्तक एवं गीत का संगान किया। कार्यक्रम में मंगलाचरण तेरापंथ नगर, माधवराम की बहनों ने किया। स्वागत भाषण सुरेश रांका ने दिया। आभार ज्ञापन पुखराज चोरडिया ने किया।

आचार्य भिक्षु त्रि-जन्म शताब्दी वर्ष पर श्रद्धा प्रणति

पारदर्शिता हो तो कैसी! भिक्षु जैसी

● डॉ. साध्वी परमयशा ●

आचार्य श्री भिक्षु तेरापंथ के आदि प्रणेता थे। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनका तपस्वी ज्ञान प्रेरणादायी था। महामना की पारदर्शिता ने तेरापंथ के नीलम्बर में उनका तलस्पर्शी ज्ञान जन जन के लिए चार चाँद लगा दिए। उनकी सूक्ष्म दर्शिता काबिले तारीफ थी। सदियों सहस्राब्दियों बाद ऐसे महामानव धरा पर आते हैं।

जिण तिण नै मत मूंडज्यो

दीक्षा परीक्षा समीक्षा अन्वीक्षा के साथ का प्राणवान हो - यह आचार्य श्री भिक्षु के शासन की चिरंजीविता पहलू है। कंटालिया के भाई ने कहा- स्वामी! मेरी दीक्षा लेने की भावना है। माँ के प्रति मेरा मोह है। जब तक माँ जीवित है तब तक मैं दीक्षा नहीं ले सकता। कुछ समय के बाद उसकी माँ दिवंगत हो गयी। एकदा स्वामीजी ने पूछा-तुम्हारी दीक्षा की भावना थी अब क्या विचार है क्योंकि माँ तो दुनिया से अलविदा हो गयी। वह भाई बोला- स्वामीनाथ! और दुविधा आ गई। मैं पहाड़ी गाँवों में व्यापार करता हूँ। वहाँ 'मेरे लोग रहते हैं। कुछ मेरेणियों से मेरा मोह हो गया। कुछ ठहर कर दीक्षा लेने का भाव है। स्वामीजी ने पैनीनिगाहों से कहा- माँ तो एक थी पर मेरेणिया तो अनेक है। कब वे मेरेणियां मरेगी? कब तू दीक्षा लेगा ऐसे कायर कमजोर दुर्बल मनोबल वाले दीक्षा के काबिल नहीं हो सकते। इन्हीं भावों को गीत में गुंफित किया है आचार्य श्री तुलसी ने-

तू कद दीक्षा लेसी जब तक जीवै मेरेणियां मगरे री
दुलहिन रोवै न्याय दुलहों रोवै कुणसी दुविधा हेरी
सुण्या बात संजम री ताव चढ़े तब दीक्षा में देरी
एक मर्या दोन्यों नै लेणी पड़सी अनशन री सेरी
इण विध कर कर कड़ी कसौटी - चुपकै खिंची सब री चोटी
ज्यू त्यू मूंडणो बाबै नै जहर खारो लागै
दीक्षा के संदर्भ में ऐसे अनेक दृष्टांत भिक्षु स्वामी की महामेधा के परिचायक है। क्योंकि दीक्षा कार्यों का नहीं - वीरों का मार्ग है।

कार्तिक के ज्योतिषी श्री भिक्षु-

एक व्यक्ति स्वामीजी के पास आया। उसने पूछा, आप बड़े आलोचक हैं। शिथिलाचार पर आपने प्रहार किए हैं। आपने यह कैसे जाना कि अमुक व्यक्ति शिथिलाचारी है मैं जानना चाहता हूँ। स्वामीजी ने कहा-हम कार्तिक के ज्योतिषी हैं आषाढ़ के नहीं। आषाढ़ में अन्न की उपज तथा भाव बताए जाते हैं वे केवल भविष्यवाणी होते हैं। वे भाव

सही हो भी सकते हैं नहीं भी हो सकते हैं। किन्तु कार्तिक मास में जो भाव बताए जाते हैं वे भविष्य के न होकर वर्तमान वर्ती होते हैं। ऐसे मैंने शिथिलाचार के संदर्भ में जो लिखा है वे सब तथ्य वर्तमान अनुभव के आधार पर हैं उसमें कल्पना का समावेश नहीं है। सत्य समर्पित साधक भीख स्वामी सत्य के परम भक्त थे।

सत्य ही भगवान है। उन्होंने इस आर्ष वाक्य को हृदयंगम किया था। वे आग्रही नहीं, सत्याग्रही थे। उनका मस्तिष्क सत्य संयम समता के तटबंधों से आलोकित था।

असाधारण महानायक श्री भिक्षु-

एक व्यक्ति ने कहा- स्वामीजी! कुछ लोग एकत्रित हो रहे हैं और आपके अवगुण निकाल रहे हैं। स्वामीजी ने कहा- अवगुण निकाल ही रहे हैं डाल तो नहीं रहे यह तो अच्छी बात है। मुझे अवगुण निकालने ही हैं। कुछ मैं निकालता हूँ कुछ वे निकालते हैं इस प्रकार मैं शीघ्र ही अवगुणों से मुक्त हो जाऊंगा। सकारात्मक सोच के परमाणु आचार्य भिक्षु के रोम-रोम में भरे थे। नकारात्मकता उनसे कोसों दूर थी।

यही वजह है आचार्य श्री भिक्षु असाधारण महानायक बन गए। उनका आत्मबल मनोबल संकल्पबल अध्यात्म बल बेजोड़ का नालन्दा विश्व विद्यालय के डायरेक्टर डॉ. सतकौडि मुखर्जी ने कहा- आचार्य श्री भिक्षु का जन्म मारवाड़ की धरा पर हुआ। यदि उनका जन्म जर्मन में होता तो महान विद्वान कान्त से भी ज्यादा उनका मूल्य होता। हालांकि आचार्य श्री भिक्षु Knowledge के लिए किसी College में नहीं गए पर उन्होंने 38 हजार पद भाषा के परिमाण साहित्य का सृजन करके राजस्थानी भंडार को समृद्ध बना दिया। अनुकंपा की चौपाई, विनीत अविनीत की चौपाई, श्रद्धा आचार की चौपाई, भिक्षु दृष्टांत, दान दया अनुकंपा आदि ग्रंथ आचार्य श्री भिक्षु की गौरख गाथा गाते हैं। ये ग्रंथ नहीं महाग्रंथ हैं जिनके हर पैराग्राफ में अध्यात्म की सुगंध है। हर पृष्ठ में ज्ञान का आलोक है। हर पंक्ति में भक्ति की महिमा है। हर शब्द में जीवन वीणा की झंकार है।

त्रि जन्मशताब्दी के पावन प्रसंग पर,
ऊर्जा के अक्षय कोष को प्रणाम
सफलता के प्राणकोश को प्रणाम
सौम्यता के नव उन्मेष को प्रणाम
प्रयोग धर्मा सत्य धर्मा को शत-2 प्रणाम।।

ॐ भिक्षु को याद करेगा सारा जमाना

● साध्वी मनीषाप्रभा ●

त्रिशताब्दी पावन अवसर लगता बड़ा ही सुहाना।
करिश्माई व्यक्तित्व श्री भिक्षु को याद करेगा सारा जमाना।।
बाबे की जन्मभूमि में उमड़ रहा जन जन का सैलाब।
भिक्षु महाश्रमण तेरी जन्मभूमि में आने को बताब।।
तारणहार भिक्षु इष्ट बने यहीं हर जन्म का ख्वाब।
तेरी चरणकमल आने वालों को मिलता भवौदधि किनारा।।
स्वामीजी की जन्मभूमि में बरस रही सोमरस की धारा।
पुण्यवान के पंगपग निधान गाता यह संघ सारा।।
उजली चादर का उजला व्यक्तित्व जी भरकर निहारा।
तुम अविनि अम्बर में चमकनेवाला अद्भूत अफसाना।।
श्री भिक्षु भारीमल से जुड़ती रहे जन्म जन्मों की इकतारी।
सांस सांस में वास नेक तुम्हारा नाम तेरा विघ्न बाधाहारी।।
गुरुभक्ति शक्ति में आप्लावित हो सदा तेरी शरणहारी।
अध्यात्म जगत की गहराई में जाकर बजाऊ भक्तिमय तराना।।

अंतर शक्ति जगाओ प्रभुवर

● साध्वी मुक्ताप्रभा ●

अभ्युदय के प्राणदेवता। तुम रत्नाकर हो प्रभाकर हो।
चरणों में प्रणत सारे, त्राण, शरण दिव्यदिवाकर हो।।
ओ क्रांतिदूत। अनुशासन मर्यादा तंत्र कितना प्रखर, तुम्हारा।
ओ तेरापंथ अवधूत साध्य सोपान अंतकरण सुन्दर तुम्हारा।।
ओ संघ सुमेरु, संघ प्रभावक प्रज्ञा के वातायन खोले।
नई भोर में आज खुशहाली, रोम-रोम में आनंद बोले।।
अंतर शक्ति जगाओ प्रभुवर, कल्पना का कल्पतरु छाये।
श्रेय की दिशा में कदम बढ़ाये जीवन में समरसता आये।।
चिन्मय चेतन पुंज। भिक्खुणनाम है मंगल चमत्कारी।
इतिहास पुरुष महाप्राण भिक्षु लाखों की नैया वारी।।
अनगिन है महाग्रंथ तुम्हारे साहित्य सृजन से पथ दिखलाया।
पल-पल सत्य-सिंधु अवगाहन कर तपसाधना से जीन सरसाया।।
तीन लोक में यशकीर्ति उपशम भावों की सौरभ महेके।
त्रिशताब्दी के नव आलोक में गणका कोना-कोना चहेके।।

तप, त्याग और श्रद्धा का अनुपम उत्सव

शाहदरा, पूर्वी दिल्ली।

बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी द्वारा शाहदरा, पूर्वी दिल्ली में अपना सफल चातुर्मास संपन्न करने के पश्चात एनसीआर के नोएडा, गाजियाबाद एवं फरीदाबाद जैसे क्षेत्रों का स्पर्श कर दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आईटीओ, दिल्ली स्थित अणुव्रत भवन में पदार्पण किया गया। शासनश्री मुनि विमल कुमार जी एवं बहुश्रुत मुनि उदितकुमार जी के पावन सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ जन्म जयंती के पावन

अवसर पर दिल्ली-एनसीआर स्तरीय तप अभिनंदन समारोह एवं उपासक श्रेणी सम्मान समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा, दिल्ली की ओर से 109 तपस्वियों तथा दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र से आए उपासक श्रेणी के सदस्यों का सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया गया। बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में भगवान पार्श्वनाथ को करुणा, अहिंसा और क्षमा का सजीव प्रतीक बताते हुए कहा—'भगवान पार्श्वनाथ का जीवन समता और

शांति का संदेश है। आज के अशांत युग में उनका दर्शन मानवता के लिए मार्गदर्शक दीपक के समान है।' तपस्या के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा— 'तप आत्मा की शुद्धि और आत्मिक उन्नति का सशक्त साधन है। तप और संयम के माध्यम से ही व्यक्ति अपने भीतर स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। शासनश्री मुनि विमल कुमार जी ने भगवान पार्श्वनाथ के आदर्शों को वर्तमान युग में अत्यंत प्रासंगिक बताते हुए तपस्वी भाई-बहनों एवं उपासक श्रेणी के सदस्यों के प्रति

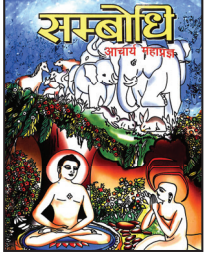
मंगलकामनाएँ व्यक्त कीं। पार्श्वनाथ जयंती के उपलक्ष्य में मुनि मधुर कुमार जी एवं मुनि ज्योतिर्मयजी द्वारा विशेष अनुष्ठान भी करवाया गया। मुनि अक्षय कुमार जी द्वारा गीत का संगान किया गया एवं मुनि धन्य कुमार जी का प्रासंगिक वक्तव्य हुआ। तेरापंथ सभा दिल्ली अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम का संचालन सभा महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया। कार्यक्रम के सफल एवं सुव्यवस्थित आयोजन में मनोज बोरड़ एवं विकास बोथरा का योगदान रहा।

जप, तप अनुष्ठान का आयोजन

विजयनगर, बैंगलोर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित तेरापंथ धर्म संघ के नवम् अधिशास्त्रा आचार्य श्री तुलसी के 100वें दीक्षा दिवस पर संपन्नता के अवसर पर श्रद्धासिक्त अभ्यर्थना के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा जाप, उपवास, आर्यम्बिल एवं मौन अनुष्ठान का आयोजन किया गया।

विजयनगर के विभिन्न उपनगरों में चार जगह सामूहिक जाप का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 72 बहनों ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। जाप में उपाध्यक्ष सुमित्रा और रानू का विशेष सहयोग रहा।

संबोधि

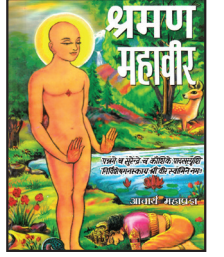


परिशिष्ट



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ-

श्रमण महावीर



क्रान्ति का सिंहनाद

आभ्यन्तर को छोड़कर केवल बाहर को पकड़ने के कारण धर्म की सरिता सूख गयी। उसका कोई स्वाद नहीं रहा। जीवन मुर्दे जैसा हो गया। सर्वत्र वीरान ही वीरान दृष्टिगत होता है। ऐसा लगता है, मनुष्य की महान् शक्ति किसी ने छीन ली हो। वह रस रहित गन्ने के छिलकों की तरह हो रहा है। प्रेम, करुणा, शांति, सरलता, सहजता आदि सद्गुणों के शुष्क स्रोतों को पुनः प्रवाहित करने का एक उपाय है कि बाहर के लगाव से मानव को मुक्त कर अन्दर के प्रति प्रोत्साहित, आकृष्ट और निष्ठावान् किया जाये। इसी में धर्म की जीवन्तता चेतनता है। धर्म को बचाने का एक मात्र यही उपाय है। बाह्य तप आभ्यन्तर के लिए है। आभ्यन्तर के बिना बाह्य तप की सार्थकता भी क्या है? आचार्य शुभचन्द्र ने कहा है-

'मनः शुद्धचैव शुद्धिः स्याद्, देहिनां नात्र संशयः।

वृथा तद्व्यतिरेकेण, कायस्यैव क्रदर्थनम्॥

'इसमें कोई संशय नहीं है कि मनुष्यों की शुद्धि, पवित्रता मानसिक शुद्धि से ही होती है। मानसिक पवित्रता के बिना केवल शरीर को कदर्थित करना बुद्धिमानी नहीं है।'

बाह्य तप के प्रकार

(१) अनशन

व्यवहार भाष्य में लिखा है- 'साधक! सिर्फ स्थूल शरीर को क्यों कृश-कमजोर कर रहा है? कमजोर करना है तो सूक्ष्म शरीर-कार्मण शरीर, कषाय (क्रोध, अहंकार, माया, लोभ), गौरव (ऋद्धि गौरव, रस गौरव, सुख गौरव) और इन्द्रियों को कर।

महावीर ने कहा है-'जायाए घासमेसेज्जा, रसगिद्धे न सिया भिक्खाए' -साधक रसलोलुप न बने। वह भोजन संयम और चेतना के जागरण के लिए करे। आहार करने का उद्देश्य इससे स्पष्ट होता है। साधक जिस ध्येय के लिए चला है, वह सतत उसकी आंखों के सामने परिदृष्ट रहे। एक क्षण भी ध्येय को विस्मृत न करे। चेतना की विस्मृति अधर्म है और स्मृति धर्म है। चेतना की सुषुप्ति हिंसा है, प्रमाद है, मृत्यु है और उसकी जागृति अहिंसा है, अप्रमाद है, अमृत है। साधक जागृति के लिए जीता है। आहार भी लेता है तो चेतना के जागरण के लिए और छोड़ता है तो भी जागरण के लिए। आहार के छोड़ने से अगर चेतना जागरण में अवरोध होता है तो वह उसे ग्रहण करता है। आहार के ग्रहण और त्याग का सम्पूर्ण विवेक साधक पर निर्भर है। कैसा आहार करना? कितना करना? कब करना? कब क्यों नहीं करना? साधक अगर इन प्रश्नों को उपेक्षित करता है तो वह साधना में सफल नहीं हो सकता। बाह्य तप के कुछ भेद इन्हीं संकेतों को प्रस्तुत करते हैं।

अनशन का अर्थ है- उपवास, आहार आदि का वर्जन। यह उनके लिए है जिन्हें भोजन को छोड़कर भोजन का चिंतन भी नहीं सताता है। यदि व्यक्ति भोजन की चिंता से व्याकुल होते हैं और ध्यान पेट की तरफ चला जाता है तब उपवास सार्थक नहीं होता। (क्रमशः)

सूर्योदय होते ही सम्राट् मम्मण के घर जाने को तैयार हो गए। मम्मण राजप्रासाद में आया और सम्राट् को अपने घर ले गया। उसका घर देख सम्राट् आश्चर्य में डूब गए। वह सम्राट् को बैल-कक्ष में ले गया। वहां पहुंच सम्राट् ने देखा एक स्वर्णमय रत्न जड़ित बैल पूर्ण आकार में खड़ा है, और दूसरा अभी अधूरा है। इसे पूर्ण करना है, महाराज। मम्मण ने अंगुली-निर्देश करते हुए कहा। सम्राट् दो क्षण मौन रहकर बोले- 'तुम सच कह रहे थे, मम्मण! तुम्हारी जोड़ी का बैल मेरी गौशाला में नहीं है और तुम्हारे बैल की पूर्ति करने की मेरी राज्यकोष की क्षमता भी नहीं है। मेरी शुभकामना है-तुम अपने लक्ष्य में सफल होओ। मैं तुम्हारी धुन पर आश्चर्य चकित हूँ।'

सम्राट् ने राजप्रासाद में आ उस धनी-गरीब की सारी रामकहानी महारानी को सुना दी। दोनों की आंखों में बारी-बारी से दो चित्र घूमने लगे-एक उस कालरात्रि में नदी-तट पर काम कर रहे मम्मण का और दूसरा स्वर्णमय रत्नजड़ित वृषभयुगल के निर्माता मम्मण का।

इस घटना के आलोक में हम महावीर के असंग्रह व्रत का मूल्यांकन कर सकते हैं। हम इस तथ्य को न भुलाएं कि महावीर ने असंग्रह का विधान आर्थिक समीकरण के लिए नहीं किया था। उनके सामने गरीबी और अमीरी की समस्या नहीं थी। उनके सामने समस्या थी मानसिक शान्ति की, संयम की लौ को प्रज्वलित रखने की और आत्मा को पाने की। अर्थ का संग्रह इन तीनों में बाधक था। इसीलिए महावीर ने असंग्रह को महाव्रत के रूप में प्रस्तुत किया। भगवान् का निश्चित अभिमत था कि जो व्यक्ति अपरिग्रह को नहीं समझता वह धर्म को नहीं समझ सकता, जो व्यक्ति अपरिग्रह का आचरण नहीं करता वह धर्म का आचरण नहीं कर सकता।

परिग्रह की लौकिक भाषा है-अर्थ और वस्तुओं का संग्रह। भगवान् की भाषा इससे भिन्न है। यह शरीर परिग्रह है। संचित कर्म परिग्रह है। अर्थ और वस्तु परिग्रह है। चैतन्य से भिन्न जो कुछ है, वह सब परिग्रह है, यदि उसके प्रति मूर्च्छा नहीं है तो कोई भी वस्तु परिग्रह नहीं है। मूर्च्छा अपने आप परिग्रह है। वस्तु अपने आप परिग्रह नहीं है। वह मूर्च्छा से जुड़कर परिग्रह बनती है। फलित की भाषा में मूर्च्छा और वस्तु उसका निमित्त हो सकती है। जिसका मन मूर्च्छा से शून्य है, उसके लिए वस्तु केवल वस्तु है, उपयोगिता का साधन है, किन्तु परिग्रह नहीं है। जिसका मन मूर्च्छा से पूर्ण है, उसके लिए वस्तु परिग्रह का निमित्त है। इस भाषा में परिग्रह के दो रूप बन जाते हैं-

१. अंतरंग परिग्रह-मूर्च्छा।

२. बाह्य परिग्रह-वस्तु।

एक बार भगवान् के ज्येष्ठ शिष्य गौतम एक रंक की ओर संकेत कर बोले- 'भंते ! यह कितना अपरिग्रही है? इसके पास कुछ भी नहीं है।'

'क्या इनके मन में भी कुछ नहीं है?'

'मन में तो है।'

'फिर अपरिग्रही कैसे?'

१. जिसके मन में मूर्च्छा है और पास में कुछ नहीं है, वह परिग्रह-प्रिय दरिद्र है।

२. जिसके पास में जीवन-निर्वाह के साधन मात्र हैं और मन में मूर्च्छा नहीं है, वह संयमी है।

३. जिसके मन में मूर्च्छा भी नहीं है और पास में भी कुछ नहीं है, वह अपरिग्रही है।

४. जिसके मन में मूर्च्छा भी है और पास में संग्रह भी है, वह परिग्रही है। भगवान् ने सामाजिक मनुष्य को अपरिग्रही की दिशा में ले जाने के लिए परिग्रह-संयम का सूत्र दिया। उसका भीतरी आकार था इच्छा-परिमाण और बाहरी आकार था वस्तु-परिमाण। इच्छा-परिमाण मानसिक स्वामित्व की मर्यादा है। इसे भाषा में बांधा नहीं जा सकता। वस्तु-परिमाण व्यक्तिगत स्वामित्व की मर्यादा है। यह भाषा की पकड़ में आ सकती है। इसीलिए भगवान् ने इच्छा-परिमाण को वस्तु-परिमाण के साथ निरूपित किया। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री चूनांजी (सवाई) दीक्षा क्रमांक 210

साध्वीश्री तपस्विनी साध्वी थी। आपके तप की समग्र सूची इस प्रकार है- उपवास/71, 2/3, 3/8, 5/1, 7/1, 8/1, 9/2, 11/1, 14/2, 15/2, 20/1, 21/1, 30/1 इसके अतिरिक्त तपस्या उपलब्ध नहीं है।

- साभार : शासन समुद्र -



योगक्षेम वर्ष
2026-27

2026

January

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

February

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28

March

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

April

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

May

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

June

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

July

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

August

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

September

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

October

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

November

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

December

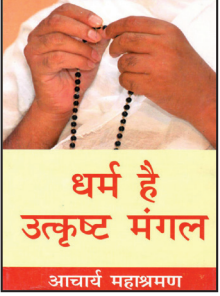
S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

कंटालिय के राम की,
जन्म त्रि सदी सुखकार,
भिक्षू पट्ट पर शोभते,
ज्योति चरण अणगार।
दो सहस्र छब्बीस में,
योगक्षेम आगाज,
जय कुंजर में आ रहा,
महाश्रमण परिवार।।



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार की ओर से सभी पाठकों को अंग्रेजी नववर्ष की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

धर्म है उत्कृष्ट मंगल



-आचार्यश्री महाश्रमण
क्या चाहते हैं युवाओं से
गुरुदेव श्री तुलसी



कर्मणा जैन

सन् 1961 बगड़ी मर्यादा महोत्सव के सुअवसर पर आचार्यवर ने कर्मणा जैन अभियान प्रारम्भ किया था। आचार्यवर का चिन्तन है कि जैन धर्म जन धर्म बने, केवल ओसवाल, अग्रवाल कोम तक ही वह सीमित न रहे। जन्मना जैन तो व्यक्ति अनायास ही बन जाता है। किन्तु कर्मणा जैन व्यक्ति समझ और संकल्प के साथ बनता है। कर्मणा जैन बनने के लिए आवश्यक है-

- नमस्कार महामन्त्र का स्मरण।
- व्यसन-मुक्त जीवन।
- निरपराध प्राणी की हत्या का परिवर्जन।
- गुरु (पथदर्शक) के प्रति आस्था आदि।

प्रत्येक युवक अपने सम्प में आने वाले पांच व्यक्तियों को भी कर्मणा जैन बनाए तो बहुत बड़ा काम हो सकता है। उनका जीवन उन्नत हो सकता है।

प्रेक्षाध्यान

प्रेक्षाध्यान एक ध्यान (Meditation) की विधि है। उसमें अध्यात्म और विज्ञान दोनों का समन्वय है, लोगों की धारणा हो सकती है कि ध्यान योग साधु-संन्यासियों की साधना का विषय है, जनसाधारण का उससे क्या वास्ता है यह बात सही है। कि साधु-संन्यासियों का जीवन तो साधना के लिए सर्वात्मना समर्पित होना ही चाहिए। पर आधा घन्टा ध्यान का अभ्यास आधुनिक तनावपूर्ण जीवन जीने वाले व्यक्तियों के लिए भी अपेक्षित है। स्नान से शारीरिक शुद्धि होती है। मानसिक, भावनात्मक मल की शुद्धि के लिए ध्यान-साधना भी धर्म का स्नान है। प्रेक्षाध्यान का समुचित प्रशिक्षण पाने के लिए एक दस दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग लेना बहुत अपेक्षित है। कम से कम एक बार प्रत्येक युवक को शिविर एटेण्ड करना चाहिए। उसके बाद दूसरी स्थिति है प्रेक्षा-प्रशिक्षण की। कुछ युवक ऐसे भी हों जो स्वयं ध्यान के अभ्यासी होने के साथ-साथ औरों को भी ध्यान करा सकें। प्रेक्षाध्यान के सैद्धांतिक और प्रायोगिक दोनों पक्षों को उनको मौलिक जानकारी हो। प्रज्ञा पर्व समारोह के प्रशिक्षण-कार्यक्रम के अन्तर्गत एक यह भी उपक्रम था-प्रेक्षा-प्रशिक्षक तैयार करना। साधु-साधवियों के अतिरिक्त स्नातक वर्ग के युवा वृन्द ने भी उसका प्रशिक्षण प्राप्त किया था। और भी कुछ युवाओं को इस दिशा में कदम बढ़ाने चाहिए।

समण दीक्षा

साधु और गृहस्थ के बीच की कड़ी है समण दीक्षा। उसमें व्यक्ति गृहस्थ जीवन तथा मुनि-जीवन की कठोर चर्या दोनों से मुक्त होता है। उसमें आध्यात्मिक विकास के लिए भी अवकाश है तथा धर्म के प्रचार-प्रसार का भी मुक्त अवसर साधक को मिल सकता है। मुनि जीवन किसी के लिए कठिन भी हो सकता है। यावज्जीवन के लिए समण दीक्षा भी सबके लिए संभव नहीं हो सकती है पर सावधिक (१ वर्ष, २ वर्ष के लिए) समण दीक्षा बहुत कठिन नहीं है। कुछ युवकों ने सावधिक समण दीक्षा का जीवन जीकर अनुभव भी प्राप्त किया है। गुरुदेवश्री चाहते हैं प्रबुद्ध युवकों की टीम-जो सावधिक समण दीक्षा स्वीकार कर त्याग और अध्यात्म के जीवन का रसास्वादन करें एवं अपनी बौद्धिक क्षमता का भी अच्छा उपयोग करें।

पुरुषार्थ

आचार्य उमास्वाति ने तत्त्वार्थ सूत्र लिखा। उसकी पीठिका का एक श्लोक है

श्रममविचिन्त्यात्मगतं तस्माच्छेयः सदोपदेष्टव्यम्।
आत्मानञ्च परञ्च हि हितोपदेष्टा नु गणहति॥

श्रम की परवाह किये बिना व्यक्ति को हितोपदेश में लगा रहना चाहिए। ऐसा करने वाला व्यक्ति अपना और पराया दोनों का कल्याण करता है। पूज्य श्री तुलसी ने, स्वयं पुरुषार्थ और साहस का जीवन जीया है। वे हर एक युवक में भी पुरुषार्थ की लौ को जलते हुए देखना चाहते हैं। उनके शब्दों में वह युवक युवक नहीं जो अकर्मण्यता और आलस्य का जीवन जीये।

गुरुदेव श्री तुलसी के इन स्वप्नों को साकार करने के लिए प्रत्येक युवक को चिन्तन एवं मनन करना चाहिए।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन
करें या आवेदन करें

<https://abtyp.org/prakashan>

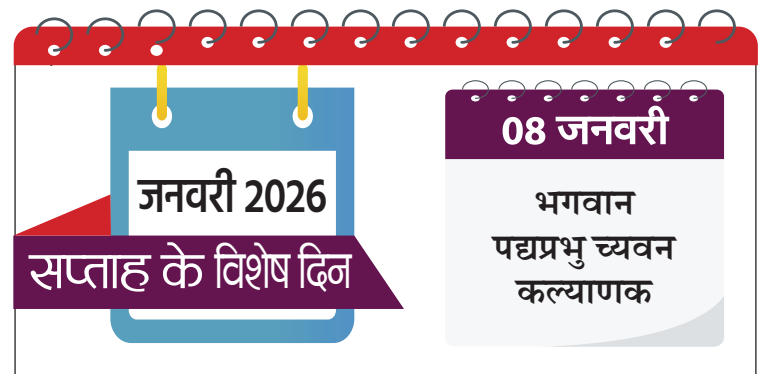


समाचार प्रकाशन हेतु

abtypitt@gmail.com पर ई-मेल

अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्



जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री जंवरिमलजी (छोटी खाटू) दीक्षा क्रमांक 453

मुनिश्री तपश्चर्या में विशेष रुचि रखते थे। आपने सात साल एकान्तर तथा निम्नोक्त तप किया- उपवास/268, 2/40, 3/2, 4/4, 5/1, 8/1, 9/2, 11/1। इस तालिका में एकांतर तप के उपवासों की गणना नहीं की है। अंत में 10 दिन के संधारे में सानंद स्वर्ग प्रस्थान किया।

- साभार : शासन समुद्र -

आचार्य श्री तुलसी के 100 वें दीक्षा दिवस पर विविध आयोजन

जसोल

अखिल भारतीय तेरापन्थ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापन्थ महिला मंडल जसोल के द्वारा मंडल अध्यक्ष ममता मेहता की अध्यक्षता में तेरापन्थ धर्मसंघ के नवम आचार्य श्री तुलसी के 100 वे दीक्षा दिवस के 9 (नौ) अभ्यर्थना में आज सामूहिक जप का आयोजन किया गया।

राजस्थान संभाग में निर्धारित समय के अनुसार पुराणा ओसवाल भवन जसोल में 'ॐ भिक्षु - जय तुलसी' का सामूहिक जप किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष ममता मेहता ने सबका आभार ज्ञापन किया।

हैदराबाद

अखिल भारतीय तेरापन्थ महिला मंडल के दिशा निर्देशन व तेरापन्थ महिला मंडल हैदराबाद के तत्वावधान में तेरापन्थ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता आचार्य श्री तुलसी के 100 वें दीक्षा दिवस पर नौ विधाओं द्वारा श्रद्धासिक्त अभ्यर्थना की गई। आचार्य श्री तुलसी तेरापन्थ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता थे। उनके 100 वें दीक्षा दिवस पर तेरापन्थ महिला मंडल हैदराबाद ने नौ विधाओं जिनमें स्केच प्रतियोगिता, स्लोगन प्रतियोगिता, आनलाइन क्वीज, जप, उपवास, आर्यबिल, मौन, साहित्य थैंट, तुलसी अष्टकम कंठस्थ शामिल हैं, के द्वारा नारी जाति के विकास पुरुष को अभिवंदना अभिव्यक्त की। इन सभी प्रतियोगिताओं में भाई, बहनों व कन्याओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

9 दिसम्बर को उनके 100 वें दीक्षा दिवस पर तेरापन्थ भवन डी वी कोलोनी सिकंदराबाद व तेरापन्थ भवन हिमायत नगर, शिवराम पल्ली, माई होम भुजा आदि अनेकों स्थानों पर 'ॐ भिक्षु जय तुलसी' का सामूहिक जप रखा गया।

इन कार्यक्रमों की सफल संयोजना में अध्यक्ष नमिता सिंधी, मंत्री निशा सेठिया आदि का श्रम सराहनीय रहा।

विजयनगर, बैंगलोर

अखिल भारतीय तेरापन्थ महिला मंडल द्वारा निर्देशित तेरापन्थ धर्म संघ के नवम् अधिशास्था आचार्य श्री तुलसी के 100वें दीक्षा दिवस पर संपन्नता के अवसर पर तेरापन्थ महिला मंडल विजयनगर जप, उपवास, आर्यबिल एवं मौन अनुष्ठान का आयोजन किया

गया। इस अवसर पर विजयनगर के विभिन्न उपनगरों में चार जगह सामूहिक जप का आयोजन किया गया। जप में उपाध्यक्ष सुमित्रा का विशेष सहयोग रहा, कन्या मंडल से प्रज्ञा छाजेड, सहमंत्री हंसा दुगड़, मंत्री सरिता छाजेड, प्रचार प्रसार मंत्री बबीता दस्सानी, श्वेता नाहटा और संयोजिका कोषाध्यक्ष मंजू भंसाली का सहयोग रहा।

चेम्बूर, मुंबई

अखिल भारतीय तेरापन्थ महिला मंडल के निर्देशानुसार आचार्य श्री तुलसी के 100वें दीक्षा वर्ष पर जप का आयोजन हुआ। इसी क्रम में चेम्बूर तेरापन्थ भवन में भी तेरापन्थ सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, कन्यामंडल ने उत्साह और श्रद्धा के साथ उपस्थिति दर्ज कराई। ओम भिक्षु ओम जय तुलसी के जप के साथ चेम्बूर से लगभग 60 बहनों व भाइयों ने गणवेश में उपस्थित होकर, परम श्रद्धेय आचार्य श्री तुलसी के प्रति अपनी गहरी भक्ति और कृतज्ञता व्यक्त की।

तोशाम

जैन श्वेतांबर तेरापन्थ सभा भवन तोशाम में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या शासन श्री साध्वी तिलक जी ठाणा-3 के सान्निध्य में आचार्य तुलसी दीक्षा शताब्दी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। शासन श्री साध्वी तिलक जी ने फरमाया कि आचार्य तुलसी 22 वर्ष की अवस्था में तेरापन्थ के आचार्य बने। उन्होंने आचार्य तुलसी की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहा कि उनका व्यक्तित्व वक्तृत्व कर्तृत्व और नेतृत्व बेजोड़ था।

उन्होंने आचार्य तुलसी के अवदानों के बारे में बताते हुए कहा कि आचार्य तुलसी ने मानव जाति के कल्याण के लिए कार्य किया। साध्वी महिमा जी एवं निर्णयप्रभा जी द्वारा आचार्य श्री तुलसी जी के जीवन वृत्त को शब्दचित्र के माध्यम से दर्शाया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा आचार्य श्री तुलसी के दीक्षा प्रसंग को नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किया एवं सामूहिक गीत का संगान भी किया गया।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा आचार्य श्री तुलसी के गीतों पर आध्यात्मिक नृत्य की प्रस्तुति दी गई। तेरापन्थ सभा

अध्यक्ष पवन जैन, मंत्री शंकर जैन, उपासिका मंजू जैन, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ज्योति जैन, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका कमलेश जैन, साक्षी जैन आदि ने गीत कविता एवं भाषण के माध्यम से अभिव्यक्ति दी।

साउथ कलकत्ता

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी दीक्षा शताब्दी के अवसर पर प्रेक्षाध्यान कार्यशाला किया गया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला में संभागियों को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा चेतना को रूपांतरित करने की प्रक्रिया प्रेक्षाध्यान है। चेतना को रूपांतरित करने की प्रक्रिया प्रेक्षाध्यान है। प्रेक्षा ध्यान से शारीरिक मानसिक,

भावनात्मक स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। व आधि, व्याधि, उपाधि से मुक्त होकर परम समाधि को प्राप्त होती है। प्रेक्षाध्यान का अर्थ है, गहराई के साथ देखना, देखना आत्मा का गुण है। आचार्य तुलसी आचार्य महाप्रज्ञ की आभारी हैं। जिन्होंने प्रेक्षा ध्यान साधना का महत्वपूर्ण उपक्रम देकर महनीय कार्य किया है। प्रेक्षाध्यान कार्यशाला में उपासक प्रशिक्षक मोहनलाल बोथरा ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराए। योगासन अंजु कोठारी ने कराए।

वडोदरा

आचार्य श्री महाश्रमण जी विदुषी सुशीष्य डॉ. साध्वी परमयश जी के सान्निध्य में " एक विराट व्यक्तित्व आचार्य श्री तुलसी का 100 वा दीक्षा दिवस " का समायोजन हुआ। डॉ. साध्वी परमयश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'जिंदगी दरिया नहीं। जो लहरों में खो जाए।

जिंदगी ख्वाब नहीं। जो सपनों में खो जाए। जिंदगी का मकसद है नर से नारायण बनना। जिंदगी दर्पण नहीं जो चेहरे में खो जाए। मंजिल उसे मिली है जो कांटों पे चल सके पैदा कर यह कमाल की दुनिया बदल सके।' YOU CAN WIN IN LIFE* यह आदर्श वाक्य आचार्य श्री तुलसी के आस-पास गुजता था। उन्होंने जो सोचा वो किया। वे एक कीर्तिमान पुरुष थे, उन्हें होसलो के साथ कीर्तिमानों की झड़ी लगा दी। वो कीर्तिमान चाहे अणुव्रत हो

या प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान हो या जैन विश्व भारती।

आचार्य श्री तुलसी की यह खासियत थी कि वे हमेशा वर्तमान में रहते थे। साध्वी मुक्ताप्रभाजी ने नौवें अधिशास्ता के हृदय कमल, चरण कमल, कंठ कमल, हस्त कमल आदि के बारे में विस्तार से बताया। साध्वी कुमुदप्रभाजी ने कीर्तिमान पुरुष के आहार-संयम, वाणी संयम, जप साधना, अप्रमाणिकता के विभिन्न प्रयोगों के बारे में बताया। कार्यक्रम में तेरापन्थ सभा अध्यक्ष श्रीमान सुशील कोठारी, महिला मंडल की अध्यक्ष उषा पुगलिया आदि ने भावांजलि अर्पित की। साध्वी विनम्रयश जी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

मानसा

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में तुलसी दीक्षा शताब्दी समारोह का कार्यक्रम समायोजित किया गया। साध्वी जी ने कहा-विश्व की महाशक्ति का नाम है - तुलसी। विश्व बंधुत्व की चेतना का नाम है - तुलसी। जिनका विलक्षण व्यक्तित्व अनुपम था। जिन्होंने अपने कर्तव्य से संघ में विकास के नूतन द्वारा खोलें। श्रद्धा, समर्पण के साथ हम गुरुदेव तुलसी की दीक्षा शताब्दी मना रहे हैं। साध्वी गुणप्रेक्षा जी ने अपने आराध्या की अर्चना में अपनी भावना व्यक्त की। साध्वी संवरविभा जी ने कविता के माध्यम से तुलसी के व्यक्तित्व को उजागर किया।

साध्वी हेमंतप्रभा जी ने गीता का समुधुर संगान किया। सभा अध्यक्ष सुरेंद्र ने अपने वक्तव्य के साथ कुशल संचालन किया। तप-जप त्याग प्रत्याख्यान के साथ कार्यक्रम मनाया गया। अभातेयुप सदस्य अनुज जैन पंजाब सभा के सदस्य सुरेश जैन विशेष रूप में उपस्थित थे।

कोलकाता, हावड़ा

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी दीक्षा शताब्दी पर अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन अणुव्रत समिति, कोलकाता हावड़ा द्वारा तेरापन्थ भवन में किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को

संबोधित करते हुए मुनि श्री जिनेश कुमार जी ने कहा- आचार्य श्री तुलसी अध्यात्म के पुरोधा पुरुष थे। उनकी दिव्य वाणी ने भारतीय जनता के मानस को झंकृत कर रूपान्तरित भी किया। वे जिनशासन के ज्योतिर्धर व दिव्य पुरुष थे। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा अणुव्रत गीत के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण अणुव्रत समिति के अध्यक्ष नवीन दुगड़ ने दिया। अणुव्रत समिति के मंत्री सुरेंद्र मुणोत आदि ने अपनी काव्य प्रस्तुति दी। इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष प्रताप दुगड़ व साउथ सभा के पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र दुगड़ ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन तरुण सेठिया ने किया।

साउथ कोलकाता

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि श्री जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी दीक्षा शताब्दी पर एक 'शाम तुलसी के नाम' कार्यक्रम का आयोजन तेरापन्थ भवन में तेरापन्थ युवक परिषद साउथ कोलकाता द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य संगगायक राजेंद्र पींचा थे।

इस अवसर पर आशीर्वचन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- इस धरा पर अनेक महापुरुष हुए हैं वे दूरदर्शी व नियोजक व निर्माता थे। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन तेरापन्थ युवक परिषद के मंत्री मोहित दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन पूर्वअध्यक्ष मोहित बैद ने किया।

इरोड

अखिल भारतीय तेरापन्थ महिला मण्डल द्वारा निर्देशित तेरापन्थ महिला मण्डल इरोड द्वारा आयोजित स्थानीय तेरापन्थ भवन में महिला समाज की ओर से श्रद्धासिक्त अभ्यर्थना आचार्य श्री तुलसी संयम शताब्दी दिवस पर आयोजित 'ॐ भिक्षु जय तुलसी' का नौ घंटे का लगातार जप में 24 बहनों की उपस्थिति रही। श्रावको एवं श्राविकाओं की भी अच्छी उपस्थिति रही। स्वागत भाषण अध्यक्षा समता जीरावला ने प्रस्तुत किया। एवं मंत्री कविता सिंधी द्वारा आभार ज्ञापन व्यक्त किया गया।

आचार्य श्री तुलसी के 100 वें दीक्षा दिवस पर विविध आयोजन

साउथ कलकत्ता

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी दीक्षा शताब्दी समारोह का आयोजन साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का विषय-"आचार्य श्री तुलसी दीक्षा शताब्दी और मुमुक्षा का महत्त्व था। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - भारतीय संस्कृति के देदीप्यमान नक्षत्र आचार्य श्री तुलसी थे। उन्होंने अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि रचनात्मक प्रवृत्तियों के द्वारा जिनशासन व तेरापंथ धर्म संघ को ऊंचाई दी। वे विद्या, विनय, विवेक से संपन्न थे। शम सम श्रम की त्रिवेणी में स्नात थे। वे जीवन दाता, भाग्य विधाता, युगद्रष्टा, युगस्रष्टा, भविष्यदर्शी, सुझबुझ के धनी थे। उन्होंने नारी जागरण के लिए अनेक कार्यक्रम किए। उन्होंने आगम संपादन जैसा दुरुह कार्य करके जिन शासन की विशेष सेवा है।

गुरुदेव तुलसी को कालूगणी का दीप्तिमान चेहरा देखकर व वैराग्य भरी वाणी सुनकर वैराग्य का भाव जागृत हुआ। वि.सं. 1982 पौष बदी पंचमी के दिन कालूगणी के करकमलों से लाडलू में दीक्षा संपन्न हुई। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के पूर्व अध्यक्ष सुरेश गोयल, कलकत्ता सभा के उपाध्यक्ष राकेश संचेती, साउथ कलकत्ता जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बिनोद कुमार चोरड़िया, मुख्य न्यासी तुलसी कुमार दुगड़, अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष नवीन दुगड़, तेरापंथ महिला मंडल साउथ की अध्यक्ष बिंदु डागा, तेरापंथ युवक परिषद् साउथ कलकत्ता के अध्यक्ष अंकित दुगड़, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम साउथ कोलकाता के अध्यक्ष नरेन्द्र सिरोहिया ने आचार्य तुलसी दीक्षा शताब्दी के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन साउथ सभा के मंत्री कमल कुमार जैन ने किया।

माधावरम, चेन्नई

जैन तेरापंथ नगर में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य

मुनि दीप कुमार जी ठाणा-2 के सान्निध्य में आयोजित हुआ आचार्य श्री तुलसी का 100वां दीक्षा दिवस। मुनि दीपकुमार जी ने कहा-आचार्य श्री तुलसी विलक्षण महापुरुष थे। आचार्य श्री तुलसी के व्यक्तित्व का निर्माण जिन तानो-बानो से हुआ शायद दुनिया में वे उतने ही थे। इसी कारण उनके व्यक्तित्व की तुलना में किसी अन्य व्यक्ति को खड़ा नहीं किया जा सकता। उनकी विलक्षणता के अनेक घटक तत्व थे। उनमें सबको साथ में ले चलने की अद्भुत कला थी। मुनिश्री ने विस्तार से आचार्य श्री तुलसी के दीक्षा प्रसंग का वर्णन किया। वर्तमान में हम आचार्यश्री महाश्रमण में आचार्य श्री तुलसी के रूप का दर्शन कर रहे हैं। मुनि काव्य कुमार जी ने कहा- आज के दिन एक ऐसा महासूर्य तेरापंथ धर्म संघ में उदित हुआ जिसने अपनी कीरणों से तेरापंथ धर्म संघ को तेजस्वी बनाया और विकास के शिखरों पर चढ़ाया। माधावरम की बहनों ने तुलसी अष्टकम का संगान किया। प्रेक्षा प्रशिक्षक, प्रतिमा धारी श्रावक माणकचंद रांका ने गीत गाय।

बिड़दी

परमपूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पुण्ययशा जी ठाणा-4 की पावन सन्निधि में आचार्य श्री तुलसी के दीक्षा शताब्दी समारोह का आयोजन बिड़दी स्थित ईमरतलाल देवड़ा के निवास-स्थान पर हुआ। साध्वी श्री ने कहा कि आचार्य तुलसी एक ऐसे लाल थे, उस लाल को पहचाना आचार्य कालू ने! आचार्य तुलसी का जीवन विलक्षण, क्रान्तिकारी था।

उन्होंने श्रावक-श्राविकाओं साधु-साध्वियों के जीवन का आध्यात्मिक विकास किया। वे विकास की पर्याय थे। आपने युगीन समस्याओं का समाधान दिया। आचार्य तुलसी का जीवन पारस मणि के समान था जैसे पारस के स्पर्श से लोहा सोना बनता है। वैसे ही आपके चरणों में आने वाले का जीवन स्वर्णिम बन जाता है। आचार्य तुलसी का जीवन एक प्रयोगशाला था जिसका फलित है जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान। परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी इसी प्रायोगिकता को और शतगुणित कर रहे हैं। राजराजेश्वरी नगर के सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़, बिड़दी उपसभा के अध्यक्ष कुशल जी

देवड़ा, अभातेमम से मधु कटारिया, आचार्य तुलसी के संसारपक्षीय पौत्र पद्म जी खटेड़ ने भावाभिव्यक्ति दी। साध्वी वर्धमानयशाजी, बोधिप्रभाजी द्वारा आचार्य तुलसी जीवन-यात्रा पर आधारित शब्द-चित्र की रोचक प्रस्तुति दी गई। कुशल मंच संचालन साध्वी विनितयशा जी ने किया।

पर्वत पाटिया

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में पर्वत पाटिया महिला मंडल द्वारा आचार्यश्री तुलसी के 100वें दीक्षा दिवस पर जप व तुलसी अभ्यर्थना कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। तुलसी गीत की मधुर स्वर लहरियों के साथ मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। अध्यक्ष सुमन बैद ने सभी का स्वागत करते हुए कहा आज हम महिलाओं का विकास गुरुदेव की ही देन है। नया मोड़ ने हमें मंच दिया। परामर्शक कुसुम बोथरा ने कहा ग्यारह वर्ष की छोटी वय में संयम पथ पर कदम रखा और बाइस वर्ष की उम्र में तेरापंथ धर्मसंघ के नवें आचार्य बन इकसठ वर्ष तक पाट को दीप्यमान किया।

ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका खुशबू पींचा ने आचार्य श्री के कर्तृत्व को उजागर करते उनके अवदान ज्ञानशाला के बारे में बताया। कार्यकारिणी सदस्य राजू देवी बोथरा, सुनीता पारख, प्रेरणा बोथरा एवं रेखा पुगलिया ने कविता, गीतिका आदि के द्वारा अपने भावों को प्रस्तुत किया। अंत में तुलसी स्लोगन प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय, तृतीय विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। महिला मंडल मंत्री मधु झाबक ने नारी जाति के उन्नायक गणाधिपति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल व सफल संचालन कार्यकारिणी सदस्य प्रिया पुगलिया ने किया।

गोरेगांव, मुंबई

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित आचार्य श्री तुलसी के 100वें दीक्षा दिवस पर गोरेगांव श्रेत्र ने भी महिला मंडल अध्यक्ष डिंपल हिरण की अध्यक्षता में मंत्री कल्पना चोरड़िया के कुशल मार्गदर्शन में जाप अनुष्ठान में सहभागिता की, जाप में सहभागी संख्या-59 आयंबिल 1 उपवास 3 एवं 9 घंटा मौन आदि जिसमें गोरेगांव तेरापंथ महिला मंडल

एवं कन्या मण्डल की अच्छी उपस्थिति रही। सभा अध्यक्ष एवं उपासक अशोक चौधरी ने आचार्य श्री तुलसी के गुणों से अवगत कराया एवं दीक्षा दिवस पर अपनी भावना व्यक्त की। महिला मंडल बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र से जाप आरंभ किया गया। ॐ भिक्षु जय तुलसी की ध्वनि से 1 घण्टे लगातार जाप किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष डिंपल हिरण ने पूरे समाज का आभार व्यक्त किया।

मालाड़, मुंबई

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या शासन श्री साध्वी विद्यावतीजी' द्वितीय आदि ठाणा 5 के पावन सान्निध्य में आचार्य तुलसी का दीक्षा शताब्दी समारोह आयोजित किया गया। तत्पश्चात् तेरापंथ युवक परिषद ने मंगलाचरण का संगान किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष गणेशलाल कोठारी ने स्वागत वक्तव्य दिया। मंत्री सुरेश धोका, अ.भा.म.मंडल से महामंत्री श्रीमती रचना हीरण आदि वक्ताओं ने विचार व्यक्त किये। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने संवाद के माध्यम से प्रस्तुति दी। तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा एक अभिनव रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। तेरापंथ महिला मंडल ने आचार्य तुलसी द्वारा रचित गीतों के माध्यम से काव्य धारा प्रस्तुति दी। साध्वी प्रियंवदाजी ने कहा- आचार्य तुलसी का जीवन विलक्षण विविधताओं का समवाय था 'उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन कर अभिनव धर्मक्रांति की। साध्वी विद्यावतीजी ने कहा- आचार्य तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशस्ता थे अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान उनके शासन काल की ऐसी उपलब्धि में है जो चिरकाल तक अशांत और तनावग्रस्त मनुष्यों के लिए वरदान तुल्य बनी रहेगी। साध्वीश्री ने तुलसी दीक्षा शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में उपस्थित जनमेदिनी को संकल्प ग्रहण करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर साध्वी प्रेरणाश्रीजी ने कविता एवं साध्वी मृदुयशाजी ने मुक्तक प्रस्तुत किये। नगरसेविका योगिता कोली. पूर्व नगरसेविका दक्षा पटेल एवं सुनील कोली ने भी विचार व्यक्त किये एवं सामूहिक रूप में सभी ने जप करके तुलसी के प्रति श्रद्धांजली अर्पित की। आभार ज्ञापन हितेश छाजेड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ.साध्वी श्री ऋद्धियशाजी ने किया।

सेलम

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव तुलसी के १०० वे दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या पावनप्रभा जी ठाणा ४ के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में कार्यक्रम आयोजित हुआ। मंगलाचरण की प्रस्तुति शालिनी लुंकड़ ने दी। स्थानीय सभा अध्यक्ष राजेश भंसाली एवं तेयूप मंत्री प्रजीत बोथरा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी आत्मयशाजी, उन्नतयशाजी एवं रम्यप्रभाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति संवाद व गीतिका के संयुक्त रोचक शैली में प्रस्तुति दी। स्थानीय महिला मंडल की बहनों आचार्य तुलसी के विभिन्न अवधानों को नाट्य व गीतिका की रोचक शैली में प्रस्तुति दी। तत्पश्चात् साध्वी पावनप्रभाजी ने सुमधुर गीत, प्रेरणादायी वक्तव्य से तुलसीगण को अपनी अभ्यर्थना प्रेषित की। साध्वी जी की प्रेरणा से लगभग ८१ उपवास व २७ आईबिल हुए। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

अहिल्यानगर, अहमदनगर

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव तुलसी युवको के हृदयसम्राट थे- मुनि आलोक जैन एकता के प्रबल पक्षधर आचार्य तुलसी ऋषी आलोक आचार्य सम्राट आनंद ऋषी जी की निर्वाण भूमी अहिल्या नगर में पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी का दीक्षा शताब्दी समारोह जैन श्वेताम्बर समाज के सभी संप्रदाय के साधु- साध्वी के गरिमामय उपस्थिती में मनाया गया। आज का यह महनीय कार्यक्रम साक्री चातुर्मास संपन्न कर उत्तर कर्नाटक की और विहार रत डॉ. मुनि आलोककुमार जी, मुनि हिमकुमार जी की सुझबुझ का ही प्रतीक था। सभी समागत साधु-साध्वी समाज ने अत्यंत मुक्तकंठ से आज के दिन गुरुदेव श्री तुलसी के अवदान, जैन समाज को देन, मानव समाज के लिए अणुव्रत आदि पर गुणानुवाद किए। स्थानकवासी समाज की ओर से साध्वी विश्वदर्शना जी ने एवम साध्वी आदिरत्ना जी ने भी आचार्य तुलसी की स्तुति में अपने विचार रखे। कार्यक्रम को सफल बनाने में मुनि श्री, आनंदधाम संस्थान, अशोक बच्छावत, पुणे श्रावक समाज का विशेष योगदान रहा। जालना, देवलगांव मही, मनमाड, पुणे, छ. संभाजीनगर आदी क्षेत्र से श्रावक समाज उपस्थित रहे।

स्वर्ण जयंती वर्ष समारोह में सेवा और समर्पण की रची मिसाल

नई दिल्ली।

तरुण मित्र परिषद के स्वर्ण जयंती वर्ष समारोह के अवसर पर आज प्यारेलाल भवन, आई.टी.ओ., नई दिल्ली में एक अत्यंत प्रेरणादायक, गरिमायुक्त एवं सेवा-भाव से परिपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली के माननीय महापौर श्री राजा इकबाल सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह में परिषद के संस्थापक एवं वर्तमान अध्यक्ष अशोक कुमार जैन ने परिषद के पिछले पाँच दशकों की सतत समाजसेवी यात्रा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि निस्वार्थ सेवा, दृढ़ संकल्प और सामूहिक प्रयास ही परिषद की निरंतर प्रगति का आधार रहे हैं। परिषद के

महासचिव मनोज कुमार जैन ने बताया कि स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में 500 से अधिक जरूरतमंद विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप, सहायक पाठ्य-पुस्तकें, स्टेशनरी एवं ट्रेक सूट वितरित किए गए। इस वर्ष परिषद ने एक नई पहल करते हुए प्रत्येक विद्यार्थी को 50,000 की मेडिकल इश्योरेंस पॉलिसी उपहार स्वरूप प्रदान की, जिससे बच्चों के स्वास्थ्य एवं भविष्य की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। इसके अतिरिक्त दिव्यांगजनों को व्हीलचेयर, कृत्रिम अंग (Artificial Limbs), पोलियो कैलिपर्स तथा जरूरतमंद महिलाओं को बैटरी संचालित इलेक्ट्रिक सिलाई मशीनें भी प्रदान की गईं। महापौर राजा इकबाल सिंह ने अपने संबोधन में तरुण मित्र परिषद के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि समाजसेवी

संस्थाओं के सक्रिय सहयोग के बिना किसी भी सरकारी प्रयास की पूर्णता संभव नहीं है। उन्होंने बच्चों, महिलाओं एवं दिव्यांगजनों के कल्याण हेतु परिषद द्वारा किए जा रहे प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई एवं आभार व्यक्त किया और भविष्य में भी हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों के रूप में निदेशक पियूष गुप्ता, संस्थापक मनोज मैदिरता (मै. जीवन पब्लिशिंग हाउस), निगम पार्षद श्रीमती अल्का राघव, परिषद की संरक्षिका सुश्री सुधा गुप्ता तथा धर्मपाल-सत्यपाल चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने परिषद की सेवा-प्रधान पहलों की सराहना करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहायता पहुँचाने के प्रयासों को अनुकरणीय बताया।

पृष्ठ 1 का शेष

हमारा मार्ग प्रशस्त...

वर्तमान में जैन विश्व भारती साहित्य प्रकाशन की अधिकृत संस्था है। आज कितनी किताबें जैन विश्व भारती के द्वारा प्रकाशित होती हैं। साहित्य हाथ में आता है तो पढ़ने वाले लोगों का ज्ञान भी विकसित हो सकता है। वह भी समय रहा होगा, जब बिना किताबों के ज्ञान का प्रसार होता था।

हमारे धर्मसंघ में अतीत में हुए दस आचार्यों में चार आचार्य - आचार्य श्री भिक्षु, श्रीमद् जयाचार्य, आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले रहे हैं। आचार्य श्री भिक्षु की अनेक संपदाओं में एक साहित्य संपदा को भी देख सकते हैं। ज्ञानावरणीय कर्म का विशेष क्षयोपशम होने पर ही साहित्य का सृजन होता है। आचार्य भिक्षु के साहित्य में तात्त्विक बोलों और आख्यानों

का पद्यात्मक रूप साहित्य प्राप्त होता है। आचार्य भिक्षु ने जो साहित्य संपदा प्रदान की है वे हमारे तेरापंथ धर्मसंघ के आधारभूत ग्रन्थ हैं। इतनी प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन करने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। उनके ज्ञानावरणीय कर्म का कितना क्षयोपशम रहा होगा?

स्वामीजी का साहित्य और फिर बाद में प्रज्ञा पुरुष श्रीमज्जयाचार्य ने जो साहित्य की रचना की वह बहुत बड़ी बात है। उन्होंने तो पद्यात्मक रूप में राजस्थानी भाषा में साहित्य का सृजन किया। हमें तत्त्वज्ञान, तेरापंथ दर्शन, आदि के माध्यम से ज्ञानार्जन का निरंतर प्रयास करना चाहिए। आचार्य भिक्षु की साहित्य संपदा आज भी हमारे पास उपलब्ध है, जो हमारा मार्ग प्रशस्त कर रही है। आचार्य श्री ने साधु-साध्वियों व समणियों की अनेक जिज्ञासाओं को सामाहित किया। 'शासन गौरव' साध्वी

राजीमती जी द्वारा रचित 'आत्म विशेष पथ' पुस्तक को जैन विश्व भारती की ओर से आचार्य श्री के समक्ष लोकार्पित किया गया।

आचार्य श्री ने इस संदर्भ में प्रेरणा प्रदान की। साध्वी सम्यक् प्रभा जी ने अपनी प्रस्तुति देते हुए सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया। अनिता डागा ने गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल-कंटालिया ने भी गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में बभान-झांझड़िया स्कूल के छात्र-छात्राओं की विशेष उपस्थिति रही, विद्यालय के प्राध्यापक महेन्द्र सिंह रावत ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्य प्रवर ने उपस्थित विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रतिज्ञा करवाई। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पृष्ठ 2 का शेष

वह शिष्य उपलब्धिमान...

आचार्य भिक्षु के गृहत्याग जीवन के कुछ वर्षों में वे अपने गुरु के संभावित उत्तराधिकारी के रूप में माने जाने लगे थे, यह भी उनकी विशेष उपलब्धि थी। उससे भी बड़ी उपलब्धि यह थी कि इतनी ऊंची संभावना को प्राप्त करने के बाद भी उनका क्रान्ति का निर्णय कर

लेना एक बड़ी बात है।

आचार्यश्री ने चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी के क्रम को संपादित करते हुए चारित्रात्माओं को अनेक प्रेरणाएं प्रदान की। आचार्यश्री की प्रेरणा और अनुज्ञा से सभी साधु-साध्वियां व समणियां पंक्तिबद्ध हुए तो मानों मर्यादा महोत्सव जैसा दृश्य कंटालिया में उपस्थित हो

गया। सभी चारित्रात्माओं ने लेखपत्र का उच्चारण किया। आचार्यश्री के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान किया। राजुल कांकरिया ने गीत की प्रस्तुति दी। प्रकाश गादिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

बोलती किताब

खोज समाधान की



हम जिस युग में जी रहे हैं, वह द्वन्द्वों से भरा हुआ है। जीवन का हर क्षेत्र—चाहे वह सामाजिक हो, आर्थिक हो या मानसिक—किसी न किसी रूप में संघर्ष और जटिलता से जूझ रहा है। यह सृष्टि का स्वाभाविक नियम है कि जहां द्वन्द्व है, वहां समस्या अनिवार्य रूप से उपस्थित होगी। मनुष्य ने बार-बार इस धरती को समस्यामुक्त बनाने का प्रयास किया, किंतु ऐसा कभी संभव नहीं हुआ और न ही भविष्य में होगा। कारण यह है कि जब तक 'दो' हैं—मतभेद, इच्छाएं, विचार और आकांक्षाएं—तब तक संघर्ष और असंतुलन बना रहेगा।

प्रश्न यह नहीं कि समस्याएं क्यों हैं, बल्कि यह है कि उनका सामना किस दृष्टि से किया जाए। समस्याओं से भागने या उन्हें नकारने की बजाय उनका समाधान खोजना ही जीवन की सच्ची कला है। बाहरी और भीतरी—दोनों प्रकार की समस्याएं मनुष्य के अस्तित्व का हिस्सा हैं। बाहर की दुनिया में अभाव, रोग, असुरक्षा और प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियां हैं, तो भीतर की दुनिया में लोभ, क्रोध, वासना, घृणा और छल-कपट जैसी प्रवृत्तियां। बाह्य जगत की समस्याओं को मनुष्य ने खेती, उद्योग, विज्ञान और चिकित्सा के माध्यम से काफी हद तक सुलझा लिया, किंतु भीतर की अशांति आज भी उसके जीवन को अस्थिर बनाए हुए है।

भीतर की इन समस्याओं के समाधान के लिए मानव ने धर्म और अध्यात्म का मार्ग अपनाया। धर्म का उद्देश्य केवल पूजा या अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और चेतना की जागृति है। ध्यान इस प्रक्रिया का सबसे प्रभावशाली साधन है—यह केवल धार्मिक साधना नहीं, बल्कि एक गहरी वैज्ञानिक प्रक्रिया है। जैसे वैज्ञानिक माइक्रोस्कोप से सूक्ष्म जगत का अध्ययन करता है, वैसे ही ध्यानशील व्यक्ति अपनी चेतना के सूक्ष्मतरंग स्तर तक पहुंचकर स्वयं को पहचानने लगता है। ध्यान एक ऐसा आंतरिक यंत्र है जो बाहरी उपकरणों से कहीं अधिक शक्तिशाली है।

अतः समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए अरण्यवासी बनने की आवश्यकता नहीं है। समाधान समाज से पलायन में नहीं, बल्कि समाज के बीच रहकर जागरूकता से जीने में है। जब हम ध्यानपूर्वक किसी समस्या को देखते हैं, तो वह हमारे लिए शत्रु नहीं, बल्कि शिक्षक बन जाती है। ध्यान की दृष्टि हमें सिखाती है कि हर द्वन्द्व के भीतर एक संदेश छिपा है, हर कठिनाई एक अवसर है, और हर समस्या आत्मविकास का मार्ग खोलती है। ध्यान न केवल समाधान का साधन है, बल्कि जीवन जीने की नई दृष्टि भी देता है—एक ऐसी दृष्टि, जो संघर्षों को शांति में, और समस्याओं को समाधानों में परिवर्तित कर देती है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

तुलसी प्रश्नमंच प्रतियोगिता का सफल आयोजन

साउथ कोलकाता।

बहनों द्वारा तुलसी अष्टकम् के संगान से हुआ।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सानिध्य में आचार्य श्री तुलसी की दीक्षा शताब्दी के अवसर पर तुलसी प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल साउथ कोलकाता द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया।

तुलसी प्रश्नमंच प्रतियोगिता जैन ज्ञान प्रश्नोत्तरी के आचार्य तुलसी के अध्याय पर आधारित थी। प्रतियोगिता का प्रारंभ तेरापंथ महिला मंडल की

स्वागत भाषण तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष बिंदु डागा ने दिया।

इस अवसर पर आशीर्वचन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - आचार्य श्री तुलसी जिनशासन के शिखर पुरुष थे।

प्रतियोगिता में कुल नौ ग्रुप में 35 बहनों ने भाग लिया।

विजेता ग्रुपों को तेरापंथ महिला मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया।

महाचरण का द्वितीय दिवस : आचार्य भिक्षु का शैशवकाल

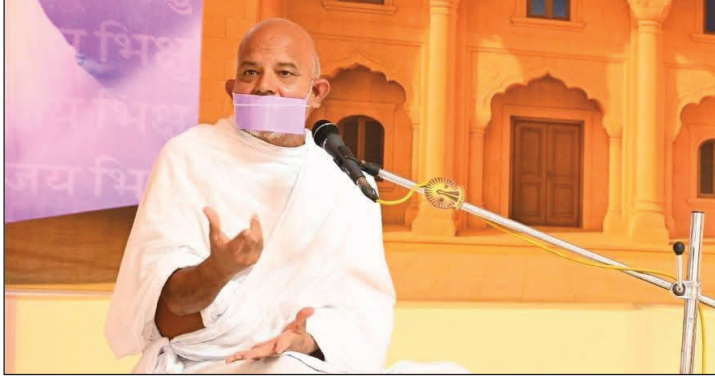
समस्याओं के समाधायक थे आचार्य श्री भिक्षु : आचार्यश्री महाश्रमण

कंटालिया।

16 दिसंबर, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता आचार्य श्री भिक्षु की जन्म स्थली कंटालिया में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रवास का द्वितीय दिवस। भव्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के महाचरण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सर्वप्रथम मुनि कीर्तिकुमार जी व मुनि अहम् कुमार जी ने गीत की प्रस्तुति दी। मुख्यमुनि श्री महावीर कुमार जी ने “आचार्य भिक्षु का शैशवकाल” विषय पर विशद अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि कंटालिया की इस धरती से ऐसा महासूर्य उद्घाटित हुआ था जिसने पूरे जगत में ऐसा प्रकाश फैलाया, जो प्रकाश आज भी लोगों के मिथ्यात्व और अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करने में समर्थ है।

महातपस्वी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते



हुए फरमाया कि धर्म व्यक्ति के जीवन में होता है तो परम को प्राप्त कराने वाली चीज व्यक्ति के पास होती है। व्यक्ति का शैशवकाल भी होता है परन्तु जन्मों से भी संबद्ध हो सकते हैं, शिशु-शिशु में भी अंतर हो सकता है। इस शैशव काल का बढ़िया उपयोग किया जाना चाहिए। बच्चा थोड़ा बड़ा हो जाए तो उसे अच्छे संस्कार दिए जा सकते हैं और संस्कार देने का प्रयास तो गर्भावस्था से ही किया जा सकता है।

अभी हम कंटालिया में हैं। आचार्य श्री

भिक्षु की जन्म-स्थली का गौरव कंटालिया को प्राप्त हो। अभी आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष चल रहा है। इस वर्ष के दौरान कंटालिया में हमारा आना हो गया है। हमने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की भी जन्मशताब्दी मनाई थी, लेकिन टमकोर आना नहीं हो पाया था, परन्तु आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के दौरान कंटालिया में आना हो गया है। आचार्य भिक्षु शैशवकाल में ही समस्याओं का समाधान निकालने वाले थे। उनकी बुद्धि विलक्षण थी। ऐसा प्रतीत होता है

कि ज्ञान का उनमें विशेष क्षयोपशम था। शैशव काल प्रत्येक व्यक्ति का आता है परन्तु विशेष बात यह है कि शैशव काल का विशेष लाभ उठाने का प्रयास होना चाहिए। आचार्य श्री तुलसी अपने जीवन के बारहवें वर्ष में, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी जीवन के ग्यारहवें वर्ष में साधु बन गए थे। साध्वी गुलाबसती की तो जीवन के आठवें बरस में ही दीक्षा हो गई थी। तेरापंथ धर्मसंघ के आज तक के इतिहास में साध्वी गुलाब सती की दीक्षा सबसे कम आयु में हुई थी। शैशवावस्था में ज्ञानार्जन का प्रयास होना चाहिए। जिन साधु-साध्वियों, समणियों का शैशवकाल अथवा थोड़ी अधिक अवस्था चल रही है, उनको इस काल के सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री के ज्येष्ठ भ्राता स्व. सुजानमल जी दूगड़ के देहावसान के संदर्भ में स्मृति सभा का आयोजन हुआ। इस संदर्भ में सर्वप्रथम आचार्य प्रवर ने कहा कि शास्त्र में शरीर

को अनित्य कहा गया है और इसका नाश होता ही है। सुजानमल जी दूगड़ का देहावसान हो गया। वे हमारे संसारपक्षीय परिवार में सबसे बड़े थे। आचार्यश्री ने उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना की।

मुख्यमुनिश्री महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी, स्व. सुजानमल जी की संसारपक्षीय पुत्री साध्वी सुमतिप्रभा जी, साध्वी चारित्र्यशा जी, मुनि कुमारश्रमण जी, मुनि कीर्तिकुमार जी, मुनि विश्रुतकुमार जी, मुनि योगेशकुमार जी ने उनकी आत्मा के ऊर्ध्वारोहण की आध्यात्मिक मंगलकामना की। दूगड़ परिवार की ओर से सूरजकरण दूगड़, श्रीचंद दूगड़, महेन्द्र दूगड़, नितेश, धीरज, मधु, सुमति चंद गोठी, गौतम जे. सेठिया, रूपचन्द दूगड़ ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्य प्रवर ने दूगड़ पारिवारिकजनों को आध्यात्मिक संबल प्रदान किया।

महाचरण का पंचम दिवस : आचार्य भिक्षु और धर्म क्रान्ति

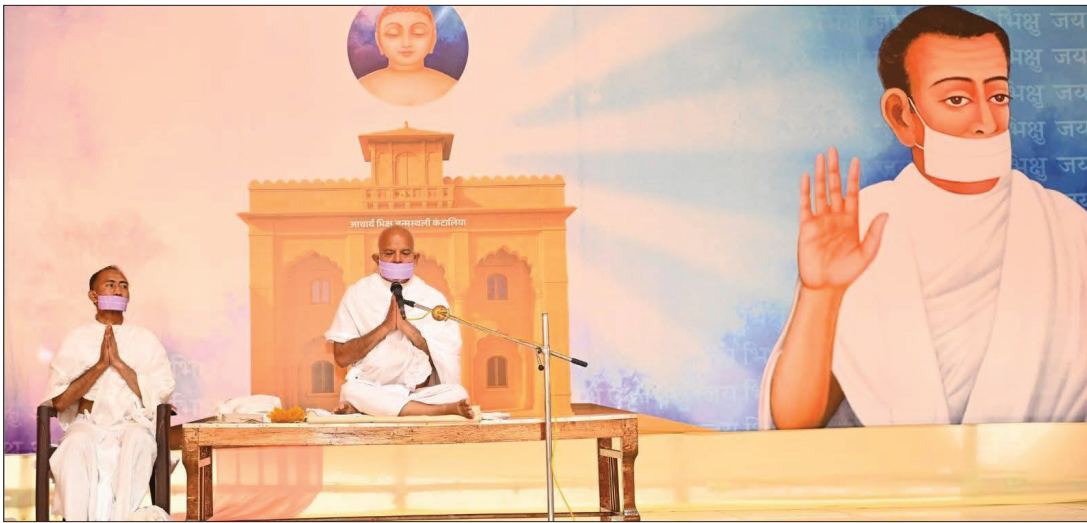
आचार और विचार की शुद्धता के लिए स्वामीजी ने की महा धर्म क्रान्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

कंटालिया।

19 दिसंबर, 2025

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के महाचरण का आज पांचवां दिवस। चतुर्विध धर्मसंघ की विशाल उपस्थिति में आचार्य श्री महाश्रमण जी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ आज के कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मुनि नम्र कुमार जी ने गीत का संगान किया। आज के निर्धारित विषय - “आचार्य भिक्षु की धर्म क्रान्ति” पर मुनि कुमारश्रमण जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

तदुपरान्त युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म की अतिसंक्षेप व्याख्या है - अहिंसा धर्म है, संयम धर्म है, और तप धर्म है। धर्म अपने आप में बहुत शुद्ध तत्त्व है। धर्म जब शुद्ध है तो उसमें क्रान्ति की अपेक्षा भी कहाँ होती है? आज के दिन का विषय निर्धारित है - “आचार्य भिक्षु की धर्मक्रान्ति”। धर्म के संदर्भ में क्रान्ति वहाँ अपेक्षित होती है, कि जो धर्म के अनुयायी लोग हैं, उन्होंने जो धर्म स्वीकार किया है, उसका पालन सही



रूप में हो रहा है या नहीं? जहाँ धर्म का पालन सही ढंग से नहीं होता, वहाँ क्रान्ति की अपेक्षा हो सकती है। धर्म की व्याख्या और आचार के संदर्भ में धर्म क्रान्ति की जा सकती है। आचार्य भिक्षु के द्वारा जो धर्म क्रान्ति की गई वह धर्म की व्याख्या और आचार के संदर्भ में की गई।

दो शब्द हैं - शांति और क्रान्ति। शांति अर्थात् कषायों का उपशमन। शांति बहुत अच्छी चीज है, परन्तु कभी-कभी शांति में क्रान्ति भी अपेक्षित हो सकती है। क्रान्ति

करने से कोई लाभ लग रहा हो तो क्रान्ति भी अपेक्षित हो सकती है। क्रान्ति करने से कोई लाभ लग रहा हो तो क्रान्ति करें अन्यथा अनावश्यक संघर्ष में नहीं जाना चाहिए। तेरापंथ में मान्यता और आधार के संदर्भ में जो धर्मक्रान्ति हुई है, उसमें किसी अंश में राजनगर के श्रावकों का भी योगदान है। पहली क्रान्ति राजनगर के श्रावकों द्वारा ही की गई। स्वामी जी ने तो बाद में क्रान्ति की। अतः पृष्ठभूमि में राजनगर के श्रावकों द्वारा की गई क्रान्ति

ही है। क्रान्ति का उद्देश्य सही हो तो किसी कार्य में पुनः निर्मलता आ सकती है। क्रान्ति करने वाले में कठिनाईयों को झेलने का माद्दा, संघर्षों को झेलने की ताकत हो तभी क्रान्ति सफलता को प्राप्त हो सकती है। आचार्य भिक्षु में साहस और मनोबल था। स्वामीजी गुरु के आंसुओं को देखकर द्रवित नहीं हुए और किसी से भी नहीं डरे, इन दोनों परिस्थितियों में स्वामीजी मजबूती से अपने मार्ग पर डटे रहे। आचार्य श्री भिक्षु की भावी

उत्तराधिकारी की संभावना थी और ऐसी अनुकूलता की स्थिति का परित्याग कर, समुदाय, संघ को छोड़ देना एक क्रान्ति ही नहीं महाक्रान्ति है। आचार्य भिक्षु की क्रान्ति में त्याग बोलता है। आचार और विचार की शुद्धता को ध्यान में रखते हुए की गई क्रान्ति कल्याणकारी हो सकती है।

आचार्य प्रवर ने मंगल प्रवचन के उपरान्त साधु-साध्वियों और समणियों की जिज्ञासाओं को समाहित किया।

गुरुदर्शन करने के उपरान्त साध्वी कुन्दनप्रभा जी ने अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया और अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनि चैतन्य कुमार जी ने भी अपनी भावनाएं अभिव्यक्ति की। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। नवरत्नमल गादिया व लता कांकरिया ने अपनी अभिव्यक्ति दी। हितेश मरलेचा ने गीत की प्रस्तुति दी। राजस्थान शिक्षक संघ ‘आजाद’ जिला शाखा पाली के जिलाध्यक्ष घनश्याम सेन ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। आचार्य प्रवर ने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

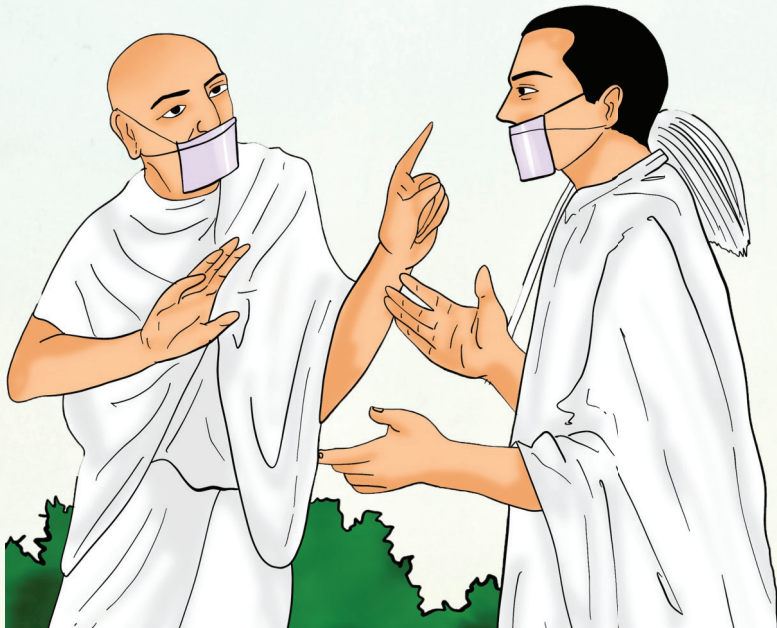
कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

संघ से पृथक् हाने वालों के प्रति-2

आचार्य भिक्षु समता तथा राग-द्वेष रहित भाव की पुष्टि के लिए सदा जागरूक रहते थे। उन्होंने गण में विद्यमान साधु-साधवियों के लिए व्यवस्थाएं कीं तथा कोई कदाचित् गण से पृथक् हो जाए, उसके लिए भी व्यवस्थाएं कीं, उन्हें भविष्य के लिए प्रत्याख्यान दिलाए और मार्ग-दर्शन किया। उसका एक अनुच्छेद इस प्रकार है—

१. गण में अथवा कदाचित् कर्मयोगवश गण से पृथक् हो जाए उसे गण के साधु-साधवियों का अंश मात्र भी अवगुण बोलने का त्याग है।
२. अंश मात्र भी शंका उत्पन्न हो, आस्था उतरे, वैसा बोलने का त्याग है।
३. मन फटे, वैसा बोलने का त्याग है।
४. कर्म योग से अथवा क्रोध वश कोई साधु-साधवियों और समूचे गण को असाधु समझे। अपने आपको असाधु समझे तथा गण से पृथक् होकर फिर दीक्षा ले तो भी गण के साधु-साधवियों के प्रति शंका उत्पन्न करने का, उन्हें खोटा कहने का त्याग है। उसे वैसा का वैसा पालन करना है। हमने पुनः दीक्षा ली है। अब हम पहले स्वीकार किए हुए त्याग पालने के लिए बंधे हुए नहीं हैं— ऐसा कहने का भी त्याग है।
५. किसी को दीक्षा लेते देख या जानकर स्वयं गण से पृथक् हो, उसे शिष्य बनाकर अपना नया मार्ग निकालने और अपने मत को जमाने का त्याग है।
६. गण से पृथक् होने के बाद इस सरधा (मान्यता) के भाई-बहन हो वहां न रहे। एक भी बहन-भाई हो वहां न रहे। रास्ते चलते एक रात कारण से रहे तो पांचों विगय एवं मिठाई खाने का त्याग है। अनन्त सिद्धों की साक्षी से त्याग है।



७. कोई पूछे कि सरधा के क्षेत्रों में रहने का त्याग क्यों करवाया। उसे इस प्रकार कहना—राग-द्वेष बढ़ने की संभावना, क्लेश बढ़ने की संभावना तथा उपकार घटने की संभावना को ध्यान में रखकर तथा ऐसे अन्य अनेक कारणों को ध्यान में रखकर यह प्रत्याख्यान करवाया है।

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

बारह व्रत— भोगोपभोग

हम यह मानव जीवन में है। जीवन यापन के लिए कुछ न कुछ वस्तु आदि की आवश्यकता रहती ही है। ऐसा कोई नहीं है कि जिसे कोई भी वस्तु की आवश्यकता ही नहीं रहती। कामना से बंधा हुआ प्राणी नित्य कामनाओं की पूर्ति में लगा रहता है, सदा ही सुविधा-साधन सामग्री में लगा रहता है, साधन-सामग्री दो तरह की होती है— 'भोग की और उपयोग की'। संक्षेप में हम इसे 'भोगोपभोग' कहते हैं।

भोग 'अर्थात् जो वस्तु एक बार ही काम आए जैसे भोजन पानी आदि। 'उपभोग' अर्थात् जो चीज अनेक बार काम में आए जैसे वस्त्र, अलंकार आदि।

यह व्रत एक बड़े वर्ग को अपने अन्दर समेटे हुए है समग्र योग्य सामग्री, समग्र अलंकार, समग्र वस्त्र, दातत, मुखवास, मिठाई नमकीन आदि यानी प्रत्येक वस्तु पर इसका अधिकार है।

यह व्रत हमें प्रेरित करता है की वस्तु आदि का उपयोग करना हमारी जरूरत के मुताबिक हो न की हमारी इच्छा के अनुरूप। जब तक हम सीमा से बचे रहेंगे, संयम के पर कोर्ट में रहेंगे हम सुरक्षित रहेंगे अतः सुखाभिकांक्षी मनुष्य इस व्रत को अपने जीवन में स्थान दे बहुमान दे, यही सुखी जीवन का रहस्य है।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्षु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका



भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

वह बुद्धि किस काम की

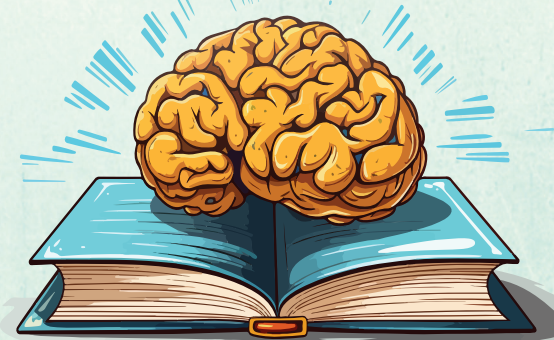
स्वामीजी ने सिरियारी में चतुर्मास किया। जोधपुर नरेश विजयसिंहजी नाथद्वारा जा रहे थे। वर्षा के कारण सिरियारी में ठहरे। उनके कुछ उच्च अधिकारी वहां स्वामीजी के दर्शन करने आए और प्रश्न पूछने लगे। पहले मुर्गी हुई या अंडा ? पहले घन या अहरन ? पहले बाप या बेटा ? इत्यादि अनेक प्रश्नों के युक्तिसंगत उत्तर स्वामीजी ने दिए। तब वे अधिकारी प्रसन्न होकर बोले-ये प्रश्न हमने बहुत स्थानों पर पूछे, पर ऐसे उत्तर किसी ने नहीं दिए। आपकी बुद्धि तो ऐसी है कि आप किसी राजा के मंत्री होते तो अनेक देशों का राज्य उस राजा के अधीन कर देते।

तब स्वामीजी बोले-मर कर वह कहां जाता है?

अधिकारी बोले-जाता तो नरक में ही।

तब स्वामीजी बोले-वही बुद्धि अच्छी है जो जिनधर्म का सेवन करती है। वह बुद्धि किस काम की जिससे मनुष्य कर्म का बंध करता है।

जिस बुद्धि के विस्तार से मनुष्य नरक में जाए वह बुद्धि किस काम की। तब वे अधिकारी बहुत प्रसन्न हुए।



क्या आप जानते हैं?



बीज/गुठली व छिलके से रहित होने पर आलुबुखारा, बेर, हरे बादाम और अमरूद को अचित्त माना जाए।

साप्ताहिक प्रेरणा

15 मिनट मौन साधना करे

महाचरण का तृतीय दिवस : आचार्य भिक्षु का गार्हस्थ्य जीवन

गार्हस्थ्य में अर्थ और काम पर रहे धर्म का अंकुश : आचार्यश्री महाश्रमण

जन्मभूमि में मनाए जाने के कारण है यह जन्म त्रिशताब्दी का महाचरण

कंटालिया।

17 दिसंबर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता आचार्यश्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के महाचरण के तृतीय दिवस का कार्यक्रम का शुभारंभ कंटालिया की पावन भूमि पर ग्यारहवें अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। मुनि वर्धमान कुमारजी ने गीत का संगान किया।

आज के निर्धारित विषय 'आचार्य भिक्षु का गार्हस्थ्य जीवन' विषय पर साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशजी ने समुपस्थित जनता को उद्बोधित करते हुए उनके सांसारिक जीवन ने अनेक घटना प्रसंगों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु का जीवन एक साधक के लिए तो आदर्श है ही, एक गृहस्थ के लिए भी एक आदर्श रूप है। तदुपरान्त जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान, आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म को बहुत महत्ता प्राप्त है, उत्कृष्ट मंगल होने का गौरव



प्राप्त है। जिस व्यक्ति के जीवन में धर्म होता है वह व्यक्ति स्वयं गुरु-गौरव संपन्न बन जाता है। मनुष्य जन्म लेता है, जीवन जीता है और एक दिन अवसान को भी प्राप्त हो जाता है। जन्म लेना और मृत्यु को प्राप्त होना, ये सामान्य घटनाएं हैं। जन्म और मृत्यु के बीच का जो जीवन है वह अपना-अपना हो सकता है और विशिष्ट भी हो सकता है।

हम अभी आचार्यश्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के संदर्भ में उनकी जन्म स्थली कंटालिया में महाचरण मना रहे हैं। इसे महाचरण कहने के पीछे दो आधार हो सकते हैं - पहली बात है कि

जिस महापुरुष की जन्म त्रिशताब्दी मना रहे हैं, उनकी जन्म स्थली में मनाया जाने वाला यह चरण है, इस संदर्भ में इसे महाचरण कहा जा सकता है। प्रेक्षा विश्व भारती में उनका जन्म दिवस भले ही आ गया था, लेकिन वह उनका जन्म क्षेत्र नहीं था। जन्म भूमि में मनाए जाने के कारण इसे महाचरण कहा जा सकता है। क्षेत्र और काल में अन्य कहीं भी हो, वहां भी आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी आ जाएगी लेकिन कंटालिया तो जहां है, वहां आना पड़ेगा। इसलिए काल को पाना सुलभ और क्षेत्र को प्राप्त करना दुर्लभ होता है। जन्मभूमि में मनाए जाने के कारण यह

चरण महाचरण है।

दिनों की संख्या की दृष्टि से भी यह तेरह दिवसीय आयोजन है, इसलिए भी महाचरण है। इसमें जो गीत और वक्तव्य आदि होते हैं, इसमें गीत गाने वाला और वक्तव्य भी पूरी तैयारी के साथ हो तो बहुत अच्छा हो सकता है। वक्तव्य अथवा प्रवचन कितना प्रभावशाली हो सकता है, इसका प्रयास किया जा सकता है। कुछ बोलने से पहले वक्ता को अच्छी तैयारी कर लेनी चाहिए। वक्तव्य में प्रामाणिकता भी रहे तो वक्तव्य प्रभावशाली हो सकता है। वक्तव्य अच्छा है तो श्रोता भी मानों उससे बंध सकते हैं।

आचार्यश्री भिक्षु के गार्हस्थ्य जीवन का वर्णन करते हुए पूज्य प्रवर ने कहा कि उनका गार्हस्थ्य जीवन अधिक लंबा नहीं था, लगभग 26वें वर्ष में उन्होंने दीक्षा ले ली थी। आचार्य भिक्षु के गार्हस्थ्य जीवन में अच्छी धार्मिकता थी। उनके गार्हस्थ्य में वियोग की स्थिति भी आई। उनकी संकल्प शक्ति भी मजबूत थी। उनमें साधना का संकल्प जागृत हुआ और सजोड़े दीक्षा की भावना जागृत हो गई। लगभग 26 वर्ष की आयु में सजोड़े दीक्षा लेना इस समय में थोड़ी असामान्य बात होती है और दीक्षा

होने तक शील पालना बहुत विशेष बात है। उसके साथ उन्होंने एकान्तर तप भी प्रारंभ कर दिया।

भगवान महावीर के साथ आचार्यश्री भिक्षु की तुलना करें तो भगवान महावीर ने भी दीक्षा से पूर्व गार्हस्थ्य में विशेष साधना की, स्वामीजी ने भी गार्हस्थ्य में साधना की। प्रभु महावीर और स्वामीजी में अनेक समानताएं प्राप्त होती हैं। आज भी कितने लोग गृहस्थ जीवन जीते हैं। गृहस्थ जीवन में भी पुरुषार्थ होना चाहिए। गृहस्थ जीवन में अर्थ, काम, धर्म, और मोक्ष में संतुलन रखने का प्रयास करना चाहिए। गृहस्थ जीवन में काम और अर्थ पर धर्म का अंकुश हो तो गृहस्थ जीवन भी अच्छा हो सकता है।

यह जन्म त्रिशताब्दी हमारे जीवनकाल में आई है। आचार्य प्रवर ने आचार्यश्री भिक्षु के संदर्भ में संस्कृत भाषा में रचित 'भिक्षु अष्टकम्' का संगान किया।

बालोतरा चातुर्मास संपन्न कर गुरु सन्निधि में पहुंची साध्वी अणिमाश्री जी ने पूज्य प्रवर के समक्ष अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : चित्रमय झलकियां

